शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
उत्तराखण्ड

# प्रवाह

Azim Premji Foundation

## उत्तरकाशी स्कूल विशेषांक – 3

अक्टूबर – नवम्बर 2014

### भीतर के पन्नों पर...

- हिमालय की शैक्षिक चोटी
- नये मुकाम पाने की कोशिश
- जहां लगते हैं उम्मीदों को पंख
- बच्चों का मनोरम आनंदालय
- खुशियों की पाठशाला

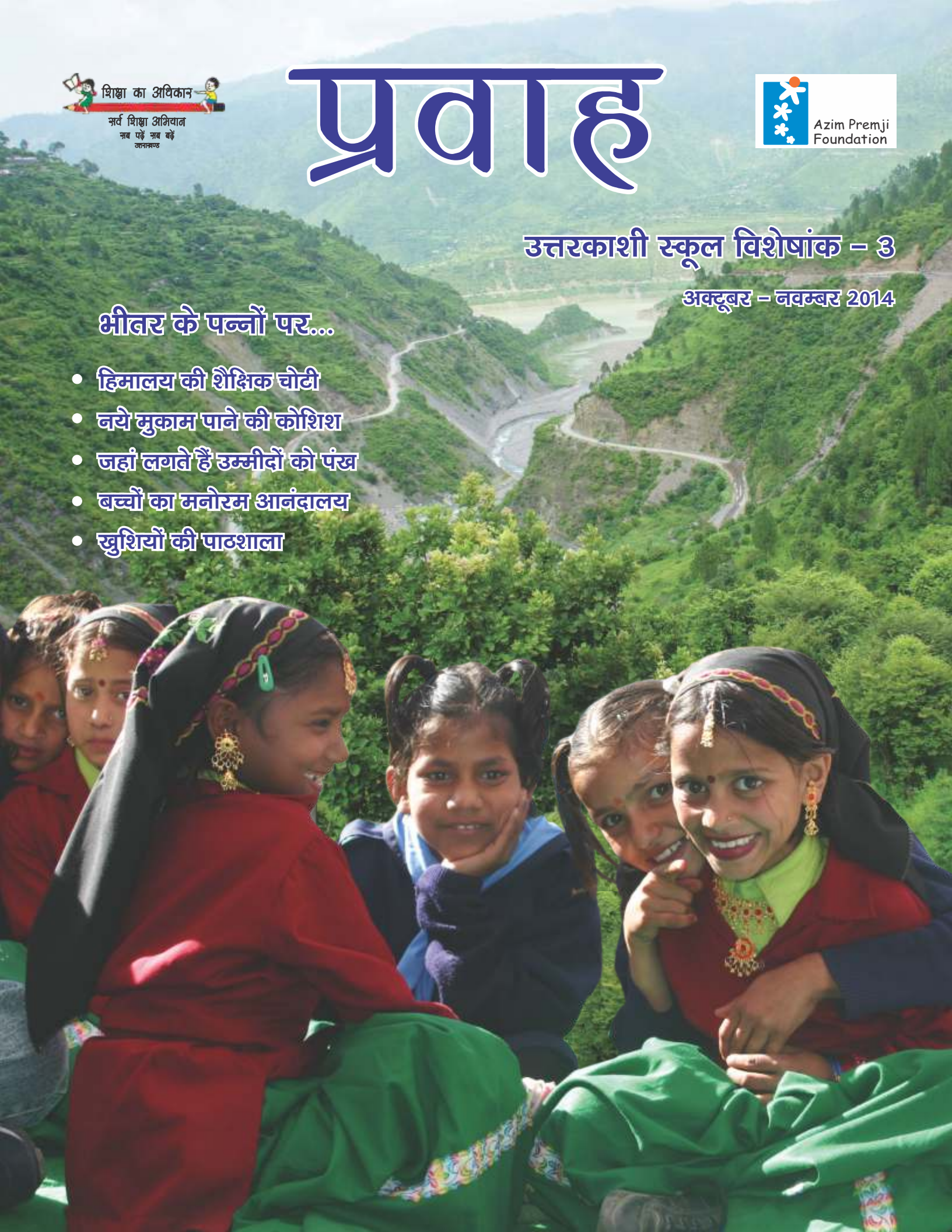

- उच्चतम शिक्षा वो है जो हमें सिर्फ जानकारी ही नहीं देती बल्कि हमारे जीवन को समस्त अस्तित्व के साथ सद्भाव में लाती है।

– रविन्द्रनाथ ठाकुर

- जीवन ऐसे जियें कि आप कल मर जायेंगे, ज्ञान ऐसे प्राप्त करो कि आप अमर हैं।

– मोहनदास करमचंद गांधी

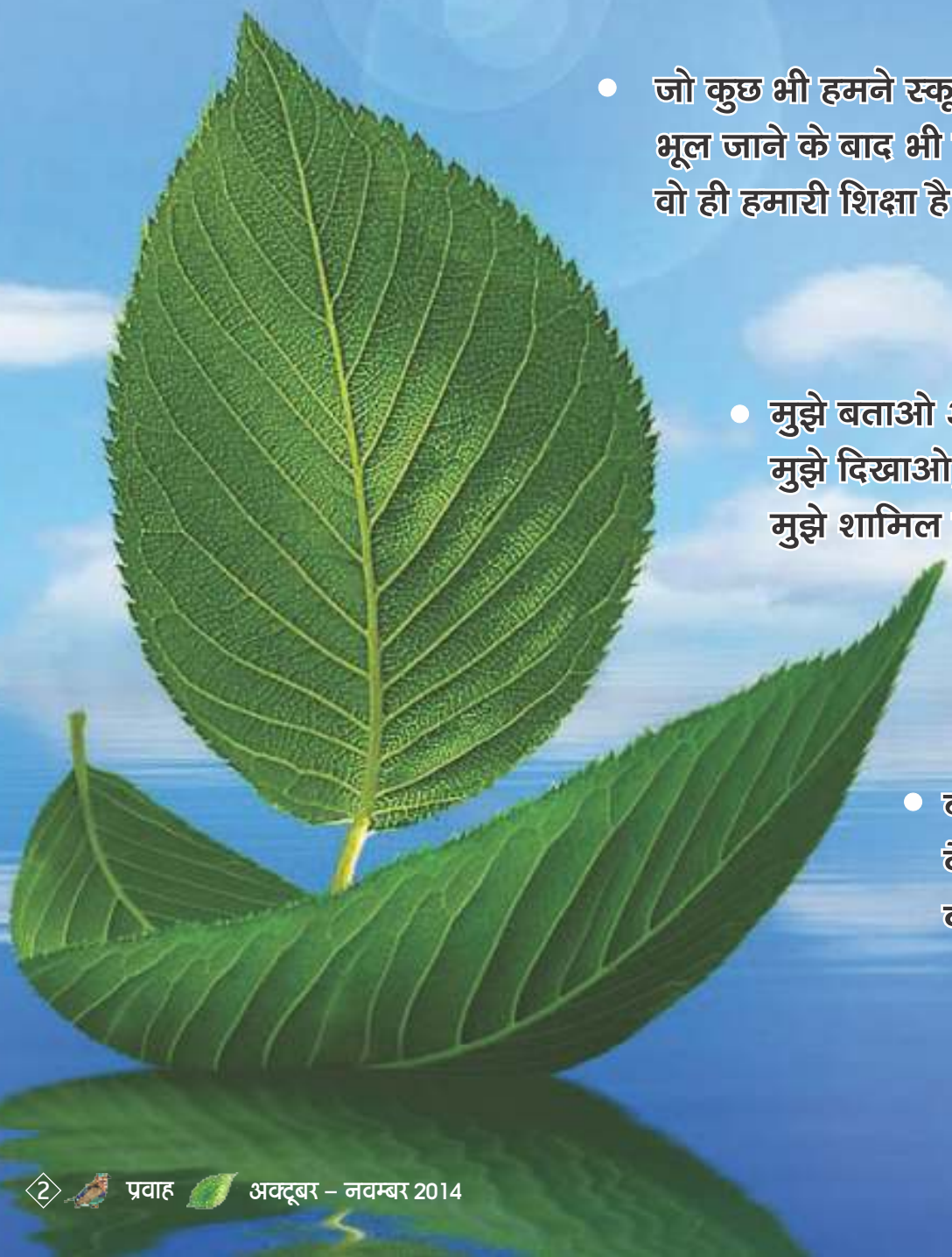

- जो कुछ भी हमने स्कूल में सीखा है, वो सब भूल जाने के बाद भी जो हमें याद रहता है वो ही हमारी शिक्षा है।

– अल्बर्ट आइंस्टीन

- मुझे बताओ और मैं भूल जाऊंगा, मुझे दिखाओ, शायद मैं याद रखूंगा, मुझे शामिल करो मैं समझ जाऊंगा।

– चीनी कहावत

- बच्चों को सिखाइये कि कैसे सोचा जाए, न कि क्या सोचा जाए।

– मार्गरिट मीड

# आशाओं का प्रवाह

जब हम स्कूल के बारे में सोचते हैं, तो यह तस्वीर उभरती है कि स्कूल विशाल तंत्र की एक इकाई है। इस इकाई में समाज, संस्कृति, राजनीति, और वह शैक्षिक तंत्र जिससे यह इकाई जुड़ी हुई होती है, उन सबके गुण धर्म प्रतिबिम्बित होते हैं। दूसरी बात यह है, कि स्कूल जहां स्थित है, वहां वह उस पारिस्थितिकी का हिस्सा होता है। स्कूल की आंतरिक संरचना में तीन जरूरी तत्व नज़र आते हैं। शिक्षक, शिक्षार्थी एवं इन दोनों के बीच में चलने वाली शैक्षिक प्रक्रियाएं। इन तीनों घटकों के बगैर स्कूल की कल्पना नहीं की जा सकती है। चौथा घटक अभिभावक हैं। स्कूल का बेहतर संचालन इस पर निर्भर करता है कि स्कूल के चारों घटक व्यवस्थित लय में चलते रहें और शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों के अनुरूप बच्चों की सीखने एवं उनके जीवन निर्माण में अपनी भूमिका निभाते रहें। विद्यालय एक गतिशील संस्था है, जिसमें शिक्षा के सभी सूत्र एवं उनके घटक समाहित होते हैं। निःसंदेह इसे साधना एक कठिन कार्य है। इसका विकास सीधी रेखा में नहीं देखा जा सकता है। इसमें तमाम आरोह–अवरोह आते रहते हैं। किसी भी स्कूल को बेहतर ढंग से चलाने की मुख्य कड़ी शिक्षक हैं जो इसके सारे घटकों को एक लय में पिरोते हैं। जब भी विद्यालयी शिक्षा की बात आती है, तो अक्सर लोग बिना पारिस्थितिकी को जाने–समझे एक निराशाजनक तस्वीर खींचते हैं। मगर कुछ ऐसे भी विद्यालय हैं जिनकी सकारात्मक कोशिश से आशाओं का प्रवाह जन्म लेता है। ऐसे विद्यालयों का समर्थन इस संपूर्ण शैक्षिक पृष्ठभूमि में अपनी चमक से उत्साह भर देता है।

प्रवाह के विगत वर्ष के दो उत्तरकाशी स्कूल विशेषांक में हमने छः–छः स्कूलों पर आलेख दिए थे। इस मुहिम की तीसरी कड़ी में हम बारह स्कूलों पर आलेख दे रहे हैं। जिनमें छः राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय भी शामिल है। हमारी कोशिश है कि इन आलेखों में हम इन स्कूलों की खूबियां पहचान पायेंगे। हमारा यह दावा नहीं है कि यही बारह विद्यालय किसी मायने में अन्य विद्यालयों से श्रेष्ठ है। हमारा मानना है कि ऐसे और भी बहुत से विद्यालय होंगे उनसे हम आगामी अंकों में परिचित करायेंगे। इस वर्ष हम इन बारह स्कूलों तक पहुंच पाए और इनकी खूबियाँ दर्ज़ कर पाए। समग्रता में किसी स्कूल को दर्ज़ कर पाना काफी कठिन है, ज़ाहिर है जिन विद्यालयों के बारे में आलेख दिए जा रहे हैं वह इन विद्यालयों की झलक मात्र है। संभव है इन स्कूलों की विस्तृत और गतिशील प्रक्रियाएं, खूबियां और भी होंगी जिन्हें हमारे साथी दर्ज़ न कर पाए हों।

इस अंक में जिन विद्यालयों के बारे में आलेख दिए गए हैं वह आपको खुशनुमा एहसास दे जायेंगे जैसे 'राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, कांसी, चिन्याली सौड़' जहां बच्चों के बुलंद स्वर गांव की गलियों में गूंजते हैं। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय ईड़ डुण्डा जहां 'नये मुकाम पाने की कोशिशें अनवरत जारी है।' राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रैथल जिसने शिक्षा के ऊंचे प्रतिमान स्थापित किए हैं। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय देवजानी मोरी 'जहां उम्मीदों को पंख लग जाते हैं।' राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सुनाली, पुरोला जिसे समुदाय ने गोद लिया है।' राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय डामटा सही मायनों में 'खुशियों की पाठशाला है।' इसी तरह की धरोहर को संजोता प्राथमिक विद्यालय कलीच, मोरी, अपनी लय में गतिशील प्राथमिक विद्यालय कुफारा, पुरोला, शिक्षण में लोकरंग घोलता प्राथमिक विद्यालय मंजियाली, नौगांव संवेदनशील का कोमल संयोजन प्राथमिक विद्यालय गढ़वालगाड, चिन्यालीसौड़। बच्चों में आत्मविश्वास भरता प्राथमिक विद्यालय उडरी। बच्चों के लिए मनोरम स्थान प्राथमिक विद्यालय सैंज, भटवाड़ी। ये वह विद्यालय हैं, जो विभिन्न प्रकार की चुनौतियों के साथ वर्तमान परिस्थिति में आशा और उम्मीद की लौ जलाए हुए हैं। हम आभारी हैं अपने तमाम शिक्षक साथियों के और पाठकों के जिन्होंने हमारे पिछले प्रयासों को मान दिया और हमें नये अंक के लिए प्रेरित किया। इस अंक के संपादन के लिए खजान सिंह और जितेन्द्र झा का विशेष सहयोग रहा।

शुभकामनाओं के साथ

अतिथि संपादक

जगमोहन सिंह कठैत
अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, उत्तरकाशी

# हिमालय की एक शैक्षिक चोटी

## राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, रैथल भटवाड़ी

– मिसिक शर्मा

**रैथल** उत्तरकाशी जनपद का एक विकसित गाँव माना जाता है। यह गाँव उत्तराखण्ड के उन चन्द गाँवों में से एक है, जिसका हर एक घर सड़क के किनारे है। उत्तरकाशी से डेढ़ किमी की दूरी पर स्थित यह गाँव समुद्रतल से करीब 2200 मीटर ऊँचा है। रैथल का मुख्य व्यवसाय खेती है। यहाँ से हिमालय की बर्फावृत श्रृंखला की मनोरम छटा दिखाई देती है। इस कारण से यह गाँव पर्यटन का केन्द्र भी हैं। प्रत्येक वर्ष हिमालय की सुन्दर वादियों को निहारने हजारों पर्यटक आते हैं। जिनके ठहरने के लिए गाँव में दो होटल भी है। जिनमें से एक गढ़वाल मण्डल विकास निगम (उत्तराखण्ड) द्वारा संचालित है।

इसी गाँव के पश्चिमी ढलान पर स्थित है 'राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रैथल'। इसकी स्थापना 1979 में हुई थी। इस विद्यालय में छात्रों की कुल संख्या 43 है। जिनमें 29 छात्र और 14 छात्र हैं। इन छात्रों के लिए यहां 4 शिक्षक नियुक्त हैं। जिनमें से एक पुरुष हैं, बाकी तीन महिला हैं।

शिक्षण का अट्ठारह वर्षों का अनुभव रखने वाले जयवीर सिंह राणा यहां के प्रधानाध्यापक हैं। इस पद पर आने के पश्चात उन्होंने सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास किया कि उनके शिक्षकों की रुचि किस प्रकार की है। उन्होंने विद्यालयी प्रबंधन को शिक्षकों में उनकी रुचि के अनुसार बाँट दिया। जिसको किताबें पढ़ने रखने–सहेजने का शौक है उन्हें पुस्तकालय का काम दे दिया। जो खेल–कूद से लगाव रखता है उन्हें खेल–कूद का कार्य सौंप दिया। इस तरह शिक्षक सहजता से विद्यालय के कार्य सुचारु रूप से चला रहे हैं।

इसी क्षेत्र में उन्होंने एक और प्रशंसनीय कार्य किया कि विद्यालय के अनौपचारिक अनुक्रम को समाप्त कर दिया है। जिससे सभी शिक्षक बिना झिझक एक दूसरे से अपनी बातों को साझा करते हैं। इससे विद्यालय में प्रजातांत्रिक माहौल है। विद्यालय का यह सहयोगी माहौल उन्हें प्रेरित करता है शिक्षा–शिक्षण में नए प्रयोग के लिए।

अगर हम शिक्षकों की बात करें तो, कविता–लेखन, कहानी–लेखन एवं नाट्य विधाओं के माध्यम से अध्ययन पर जोर देने वाली श्रीमती रजनी नेगी भाषा पढ़ाती हैं। बत्तीस वर्षों

का लम्बा अनुभव रखने वाली श्रीमती नेगी का मानना है कि भाषा रटाई या पढ़ायी नहीं जा सकती है। इसे बच्चे स्वयं रचनात्मक विधियों द्वारा प्रयोग करके ही सीखते और समृद्ध करते हैं।

सामाजिक विज्ञान पढ़ाने वाली श्रीमती मंजू भंडारी पिछले 19 सालों से इस क्षेत्र में हैं। सामाजिक विज्ञान पढ़ाने के लिए वह मात्र पाठ्य–पुस्तक पर ही निर्भर नहीं रहती है। वह विद्यालय में उपलब्ध सामग्री जैसे मॉडल, ड्रॉइंग एवं चार्ट के माध्यम से सामाजिक विज्ञान की अवधारणा को स्पष्ट करती हैं।

एक–दूसरे से सीखने पर जोर देने वाली श्रीमती सीमा व्यास विद्यालय में 'गणित और विज्ञान' पढ़ाती हैं। अपने पंद्रह वर्षों के अनुभव से वह कहती हैं कि ''गणित एवं विज्ञान बच्चों के समझ में तभी आता है, जब वह इसे प्रायोगिक तरीके से पढ़ते समझते हैं।''

प्रधानाध्यापक एवं अध्यापकों के इस समर्पण से विद्यालय की अकादमिक प्रक्रिया बड़ी तीव्रता से आगे बढ़ रही है। विद्यालय की शुरूआत प्रातःकालीन सभा से होती है। जिसमें समूह गान, करवट, समाचार वाचन के पश्चात् समान्य ज्ञान पर चर्चा होती है। अंत में राष्ट्रगान के बाद बच्चे अपनी–अपनी कक्षा में लौट जाते हैं। सभा संचालन के लिए छात्रों को तीन सदन में बाँटा गया है। ये सदन हैं : 'सत्यम' (लाल रंग), 'शिवम्' (हरा रंग), 'सुन्दरम' (पीला रंग)। छात्र सदन के अनुसार ही अलग–अलग अकादमिक गतिविधियों में भाग लेते हैं।

विद्यालय में छात्रों का एक मंत्रिमंडल है जिसे अलग–अलग मंत्रालयों के आधार पर विभाजित किया गया है। हर मंत्रालय में एक मंत्री और एक उपमंत्री है। इसका चुनाव विद्यालय के सभी छात्र मत डाल कर करते हैं। जिसे सबसे ज्यादा मत मिलता है, वह मंत्री बन जाता है। दूसरे स्थान पर रहने वाला छात्र उपमंत्री बनता है। पूरे मंत्रिमंडल का नेतृत्व प्रधानमंत्री करता है। विद्यालय का यह मंत्रिमंडल विद्यालय प्रबंधन में हिस्सा लेते है और शिक्षा, स्वच्छता, विज्ञान पुस्तकालय, कृषि, जल इत्यादि की पूर्ति एवं इसे सुचारु रूप से चलाने में अपना योगदान देता है।

विद्यालय परिसर में ही बच्चों द्वारा विभिन्न प्रकार की खेती करना अपने–आप में एक मिसाल है। कृषि प्रधान देश में जहाँ शिक्षा का अर्थ ही छात्रों को खेतों से दूर करना है मान लिया गया है। वहीं रैथल राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के यह छात्र पूरी तत्परता से गाँव की सभी फसलों (गेंहूँ को छोड़कर) को उगाते हैं। इस माध्यम से छात्र खेती से संबंधित मूलभूत जानकारी तो ले ही रहे हैं। उन्हें अपनी प्रकृति एवं पर्यावरण के बारे में भी जानने का भरपूर मौका मिल रहा है।

**विद्यालय परिसर में ही बच्चों द्वारा विभिन्न प्रकार की खेती करना अपने–आप में एक मिसाल है। रैथल प्राथमिक विद्यालय के छात्र पूरी तत्परता से गाँव की सभी फसलों (गेंहूँ को छोड़कर) को उगाते हैं। इस माध्यम से छात्र खेती से संबंधित मूलभूत जानकारी तो ले ही रहे हैं उन्हें अपनी प्रकृति एवं पर्यावरण के बारे में भी जानने का भी भरपूर मौका मिल रहा है।**

शिक्षक इस पूरी प्रक्रिया में एक कुशल पर्यवेक्षक व मददगार के रूप में मौजूद होते हैं। यह पूरी प्रक्रिया ''सतत एवं व्यापक मूल्यांकन'' (सी.सी.ई) की पद्धति से छात्रों के आकलन का मौका शिक्षकों को देती ही है। परन्तु खेती का जो सर्वोत्तम लाभ है वह कि मिलावटी दुनिया में भी बच्चे अपने हाथों से उगाए पौष्टिक एवं शुद्ध आहार ग्रहण कर रहे हैं।

यहाँ के छात्रों ने अकादमिक के साथ–साथ संकुल स्तरीय कई प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अनेक पदक प्राप्त किये हैं। इसी वर्ष संपन्न विद्यालय स्तरीय बाल मेले में 'जीवों का रहन–सहन व वातावरण अनुकूलन' विषय पर प्रोजेक्ट बनाकर प्रदर्शित किया था, जिसकी काफी सराहना की गई थी। छात्रों ने इसी विषय से संबंधित एक नाटक का भी प्रदर्शन किया।

पिछले साल संपन्न 'सपनों की उड़ान' कार्यक्रम में बच्चों ने एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया था जो काफी प्रशंसनीय रहा था। कुल मिलाकर देखा जाए तो इस विद्यालय के छात्रों ने विभिन्न प्रकार के रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षेत्रों में अपनी एक अलग पहचान बनायी है। अकादमिक रूप से गतिशील इस विद्यालय की रचनात्मकता पर पिछले दो सालों

से थोड़ा प्रभाव पड़ा है। विद्यालय के परिसर में ही माध्यमिक विद्यालय रैथल का निर्माण कार्य चल रहा है। भवन निर्माण में लगी मशीनों के शोर से जहाँ बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर असर पड़ रहा है, वहीं जगह कम होने से उनके खेलने–कूदने पर भी प्रभाव पड़ा है।

निर्माण कार्य के कारण पानी, शौचालय एवं बिजली व्यवस्था भी प्रभावित हुई है। पानी के लिए बच्चों को गाँव तक जाना पड़ता है। परन्तु इस तात्कालिक व्यवधान को नज़रअंदाज़ किया जाए तो माध्यमिक विद्यालय स्थापित होने से उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को भटकना नहीं होगा। यह स्थानीय छात्रों खासकर छात्राओं के लिए विशेष सुविधाजनक होगा।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रैथल के शिक्षक एवं बच्चों के अभिभावक के बीच भी एक अच्छा ताल–मेल है। जिसका अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हर माह की विद्यालय की प्रबंधन समिति (SMC) की बैठक की सूचना अभिभावकों को 4–5 दिन पहले दे दी जाती है। इन बैठकों में प्राप्त जानकारी के आधार पर अभिभावक भी सजगता से अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई एवं गतिविधियों का ध्यान रखते हैं।

विद्यालय और समुदाय के अच्छे संबंध का प्रभाव बच्चों के पठन–पाठन पर भी पड़ता है, जिससे छात्र पूर्णतः आत्मनिर्भर होकर पढ़ाई करते हैं।

हिमालय की 2200 मीटर ऊँची इस चोटी पर आकर पढ़ाना शिक्षकों के लिए आसान नहीं है। खासकर तब जब ठंड में तेज बर्फ़बारी हो रही हो। इसके बावजूद सीमित संसाधनों के साथ शिक्षकों की निष्ठा, समर्पण, समुदाय की भागीदारी के दायित्वबोध एवं बच्चों की हुनर और जिज्ञासा ही राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रैथल को बनाती है, ''हिमालय की एक शैक्षिक चोटी''।

## प्यारे से बच्चे

प्रातःकाल उठ जाते बच्चे
सबका मन बहलाते बच्चे,
घर आंगन में खुशियां लाते
सब पर प्रेम बरसाते बच्चे
कभी किसी से भेद न रखते
सबको प्यारे लगते बच्चे।
धमा चौकड़ी खूब मचाते
डांट डपट सह लेते बच्चे
दिन भर तो स्कूल में रहते
शाम को घर आ जाते बच्चे
कभी हंसते कभी गाते बच्चे
सबका दिल बहलाते बच्चे
कल का भविष्य कहलाते बच्चे

**–कालिका प्रसाद सेमवाल**
प्रवक्ता, जिला एवं प्रशिक्षण संस्थान,रतूड़ा, रूद्रप्रयाग

# धरोहर संजोते नव नियुक्त शिक्षक

## राजकीय प्राथमिक विद्यालय, कलीच, मोरी

**– शैलेन्द्र व चंदन**

*यह विद्यालय इस बात का उदाहरण है कि यदि विद्यालय के चारों घटक 'शिक्षक' 'शिक्षार्थी' 'शिक्षा की प्रभावी प्रक्रिया' और 'समुदाय से रिश्ते' सभी का सामंजस्य है तो इसका परिणाम बेहतर होता है।*

**राजकीय** प्राथमिक विद्यालय कलीच मोल्डी गांव से चार किलोमीटर की दूरी पर है। स्कूल पहुंचने के लिए सेब के बागानों से होकर गुजरना होता है। मार्च 2012 तक जनेश्वर प्रसाद इस स्कूल के प्रधानाध्यापक थे। उनकी सेवानिवृत्ति के बाद ऋषिपाल चौधरी इस विद्यालय के प्रभारी रहे। उन्होंने स्कूल की मरम्मत करवायी और स्कूल की दरो–दीवारों को शिक्षण अधिगम के लिए उपयोगी बनाया।

इस विद्यालय के आधारभूत आंकड़ों पर नजर डालें तो विद्यालय में कुल छात्र संख्या 34 है एवं पाँच कमरे हैं जिनमें से तीन कक्षा के लिए हैं एक किचन के लिए और एक प्रधानाध्यापक का कार्यालय कक्ष है। शौचालय पानी की सुविधा के साथ चारदीवारी है व पक्का आँगन है। दीवारों पर अवधारणा के अनुरूप तरह–तरह की कविताएँ लिखी गयी हैं। इस विद्यालय में शिक्षकों की संख्या तीन है शिवराम नौटियाल प्रधानाध्यापक तथा रतन सिंह और कुषा सहायक अध्यापक हैं। विद्यालय की इस टीम से पहले जिन शिक्षक साथियों ने काम किया है उन्होंने बहुत ही शानदार मुकाम तक विद्यालय को पहुँचाया है नयी टीम के पास इस शानदार कार्यसंस्कृति की धरोहर को बनाये रखने और समृद्ध करने की चुनौती थी।

तीनों शिक्षकों की टीम ने आपस में मिलकर चर्चा की, शैक्षणिक कार्यो की योजना बनायी। सभी लोग मिलकर कक्षा में सब विषय पढ़ाते है ऐसा करने से शिक्षकों को सभी कक्षाओं के बच्चों के साथ बातचीत का मौका मिलता है। दूसरा इससे बच्चों को भी नयापन लगता है और शिक्षक का सानिध्य मिलता है। कोशिश हमेशा यही रहती है कि बच्चों को कक्षा में सीखने–सिखाने का अवसर दिया जाए और पाठों या पाठ्यपुस्तकों में जो अवधारणाएँ दी गयी है उनको बच्चों के व्यवहारिक ज्ञान व परिवेश से जोड़कर समझाया जाए।

इस विद्यालय की यह भी एक खूबी है कि यहां छोटी कक्षाओं में बच्चों के सीखने पर काफी ध्यान दिया जाता है। बच्चों के साथ ऐसे अनेक तरीके अपनाये जाते हैं ताकि बच्चे मौखिक रूप से अपनी बातों को अभिव्यक्त कर सकें। क्योंकि अगर बच्चे झिझकेंगे तो वह कक्षा में प्रश्न नहीं पूछेंगे कुछ जिज्ञासाएं प्रकट नहीं करेंगे। फिर कक्षा– 3,4,5 में भी बच्चों के साथ काफी परिश्रम किया जाता है। यह काम नियमित और लगातार होते हैं। इसका परिणाम यह है कि बच्चों का शैक्षिक स्तर बहुत अच्छा है जिन्हें देखकर अभिभावक भी विद्यालय की प्रगति से काफी संतुष्ट हैं।

बच्चों का स्तर इतना अच्छा कैसे हो पाता है? विद्यालय का प्रभावी व सुप्रबंधन कैसे मुमकिन हो पाया? इन प्रश्नों का सीधा सा उत्तर है कि यहाँ के शिक्षकों का आपसी तालमेल बहुत अच्छा है जिसका परिणाम है कि सबने मिलकर एक शैक्षिक योजना बनाई है और इस योजना को एक टीम की तरह कार्यान्वित कर रहे हैं। पढ़ाने में आ रहे नये विचार और कठिनाइयों को आपस में साझा करते हैं और उसका निपटारा भी करते है।

शिक्षकों के बीच में अच्छे सबंध हैं तो समुदाय के साथ भी बेहतर तालमेल है। बच्चों और शिक्षकों के बीच अच्छे सबंध है। बच्चों के बीच भी बेहतर सबंध है। तीनों शिक्षकों के केन्द्र में वे सभी बच्चे हैं जिन्हें रोज़ कुछ नया 'सिखाना' है। इसके लिए वे हर सम्भव प्रयास करते हैं वे अपने ज्ञान, अनुभव, समझ के आधार पर जो कुछ भी कर सकते हैं वह सब करते हैं।

विद्यालय में बच्चों की संख्या कम न हो इसके लिए एक तो विद्यालय में पढ़ाई की गुणवता बनाये रखते हैं। दूसरा सतत रूप से सजग रहते हैं कि कोई बच्चा या अभिभावक उदासीन न हो जाए। इसके लिए तीनों शिक्षक बराबर समुदाय के सम्पर्क में रहते हैं। समुदाय से इनका रिश्ता मतलब परस्त या बनावटी नहीं है बल्कि सजीव है। इसका एक बेहतर उदाहरण यह भी है कि दोनों अध्यापक गाँव के ही रहने वाले हैं और प्रधानाध्यापक विद्यालय के ही समीप रहते हैं।

अध्यापकों के साथ भोजन माता भी विद्यालयी व्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। खाना समय पर पकाने के साथ–साथ बच्चों को हाथ धुलवाना एवं उन्हें प्यार से खिलाना यह उनके रोज की दिनचर्या में शामिल है। शिक्षक साथी भोजन की गुणवत्ता को परखने के बाद खाना बच्चों के लिए परोसा जाता है।

यह विद्यालय इस बात का उदाहरण है कि यदि विद्यालय के चारों घटक 'शिक्षक' 'शिक्षार्थी' 'शिक्षा की प्रभावी प्रक्रिया' और 'समुदाय से रिश्ते' सभी का सामंजस्य है तो इसका परिणाम बेहतर होता है। बच्चे स्कूल में बेहतर ढंग से सीखते हैं और अपने जीवन को सुंदर व सार्थक दिशा की ओर ले जाने की प्रक्रिया में अग्रसर होते हैं।

**कहानी**

चित्र : संतोषी ठाकुर

# बच्चे की लगन

एक बार की बात है एक लड़का था, वह अपने माता–पिता से बहुत प्यार करता था। बचपन से ही उसे पढ़ाई से बहुत लगाव था। उसका सपना था कि वह पढ़–लिखकर डॉक्टर बने। लेकिन उसके माता–पिता बचपन में ही गुजर गये थे जिस कारण उसकी पढ़ाई अधूरी रह गई, उसे पढ़ाने वाला कोई नहीं था। उस गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। वो बुढ़िया उस लड़के को अपने घर ले जाती है। बुढ़िया का का घर नदी के किनारे था। वह लड़का रात को उदास बैठकर आसमान में कभी तारे देखता तो कभी चाँद। और कभी दिन में समुद्र के किनारे धरती पर बैठा रहता और सोचता रहता कि कब वह अपने सपने को पूरा कर पायेगा। एक दिन वह पेड़ के नीचे उदास बैठा था तभी बुढ़िया वहां आई। उसने लड़के से उसकी उदासी का कारण पूछा। उसने कहा, बेटा बैठे रहने से और सोचने से कुछ नहीं होगा, कुछ करने से होगा। बुढ़िया कहती है जिन्दगी में कभी हिम्मत नहीं हारना और हमेशा सच का साथ देना। वह लड़का पढ़ने के लिये शहर जाता है और रात–दिन एक करके अपनी पढ़ाई में जुट जाता है। और उसका सपना पूरा हो जाता है। वह डॉक्टर बन जाता है।

**– कुमारी सुमीरा सेमवाल**
कक्षा 8वीं
रा.इ.का. साल्ड, उत्तरकाशी

# जारी है नये मुकाम पाने की कोशिशें

## राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, ईड, डुण्डा

**– मुज़फ्फ़र व सुकांत**

**जिनमें** होती है तूफां से उलझने की हसरत, ऐसी कश्ती को समंदर भी दुआ देता है इस बात को साबित करते हैं वे शिक्षक साथी जो अनगिनत चुनौतियों और पहाड़ों की दुर्गमता को मात देते है, अपनी लगन और कौशल के बल पर प्रारम्भिक शिक्षा को निरंतर नए मुकाम पर ले जाने की कोशिश में लगे रहते हैं।

हमारे साथियों द्वारा समय–समय पर विकास खण्ड के विद्यालयों का भ्रमण किया जाता रहा है, जिसके द्वारा बहुत से विद्यालयों में शिक्षकों के प्रयासों को नजदीकी से जानने व समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस यात्रा में हमने ऐसे बहुत से प्रधान शिक्षक और सहायक शिक्षकों को जाना, समझा है जो अपनी मेहनत और लगन के बल पर प्राथमिक शिक्षा में आशा का संचार कर रहे हैं। जहां ये शिक्षक, शिक्षण और शिक्षक समुदाय को गरिमा प्रदान कर रहे हैं वहीं दूसरे शिक्षक साथियों को भी प्रेरित कर रहे हैं।

ऐसे ही शिक्षकों में से एक हैं जोत सिंह चौहान जी। चौहान जी ने वर्ष 1981 में डुंडा विकास खण्ड के प्राथमिक विद्यालय नाकुरी से शिक्षण का कार्य आरंभ किया और तब से अब तक चिन्याली और भटवाड़ी विकास खण्ड के कई विद्यालयों में अध्यापन का कार्य कर चुके हैं। वर्तमान में चौहान जी उच्च प्राथमिक विद्यालय ईड में अध्यापक हैं। अध्यापन के साथ–साथ ही वे कुशल तरीके से प्रधानाध्यापक का भी दायित्व निभा रहे हैं। उन्होंने इस विद्यालय की शुरुआत वर्ष 2006 में किराये के एक घर में 10 बच्चों के साथ की। उनके अध्यापन और विद्यालय प्रबन्धन की कुशलता की बदौलत इस गाँव के बच्चे तो विद्यालय में पढ़ने आते ही हैं अन्य गाँव से भी बच्चे पढ़ने आते हैं। तीन बच्चे यहां प्राइवेट स्कूल को छोड़कर आये हैं। उनके इस प्रयास में दोनों शिक्षक साथी ताजवीर सिंह नेगी और जितेन्द्र सिंह राणा एक टीम की तरह अपने कप्तान का साथ दे रहे हैं। श्री चौहान और उनके दोनों सहयोगी शिक्षक साथियों की मेहनत और कुशलता का अनुमान विद्यालय में

पढ़ने वाले सभी 41 बच्चों के पठन–पाठन व सीखने के स्तर को देखकर सहज ही लगाया जा सकता है। बच्चों के आत्मविश्वास तथा अभिभावकों को विद्यालय पर भरोसे को देखकर बच्चों और समुदाय के आपसी रिश्ते के बारे में पता चलता है।

जोत सिंह चौहान जी का यही काम खींच लाता है हिमालय की गोद में बसे उत्तरकाशी जनपद के डुंडा विकास खण्ड के इस सुन्दर से गाँव ईड में। जहाँ यह गाँव अपने प्राकृतिक सुन्दरता से आने जाने वालों का मन मोह लेता है, वहीं यहां के उच्च प्राथमिक विद्यालय में साफ़–सुथरे प्रांगण और विभिन्न सामूहिक और नवाचारी क्रिया–कलापों में बच्चों की तल्लीनता से जुड़ा देखकर सुकून मिलता है।

जोत सिंह चौहान जी की लगन एवं नेतृत्व कुशलता का परिचय उनके प्रबंधकीय कार्य, सहयोगी शिक्षकों के बीच टीम भावना और समुदाय का विद्यालय से मेलजोल के रूप में मिलता है। साथ–साथ काम करते हुए चौहान जी के बारे में हम जितना समझ पाए वो यह है कि वे एक अच्छे इन्सान,

कुशल अध्यापक, कुशल लीडर और कुशल प्रबन्धक हैं। चौहान जी विद्यालय के सभी छोटे–बड़े कामों का नियोजन सभी शिक्षकों से राय–मशविरा करके करते हैं जिसका परिणाम यह है कि सभी शिक्षकों के बीच एक टीम भावना है। सभी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूरे मनोयोग से करते हैं। विद्यालय में आपने इस बात पर बड़ा बल दिया है कि विद्यालय की व्यवस्था और समय सारणी सभी के सहयोग से बने और सभी उसका स्वानुशासित होकर पालन करें। अतः सभी अध्यापिकाओं और बच्चों की समयबद्धता इस विद्यालय की ताकत है।

एक अध्यापक के रूप में उन्होंने बच्चों के अधिगम स्तर को बेहतर बनाया है। उसमें दो मुख्य बातें समझ आयीं। एक आपका अभिनव विचार और दूसरा है शिक्षा के दार्शनिक पक्षों, विषयगत ज्ञान और शिक्षण शास्त्रीय पक्षों की गहराई तक समझ। अभिनव विचार की झलक आपके इस काम में देखी जा सकती है कि वे बच्चों के अधिगम स्तरवार समूह बनाकर शिक्षण करते हैं और नई कक्षा में प्रवेश लेने वाले अत्यंत कमजोर छात्रों को अलग से समय देकर उन्हें सभी के बराबर लाने का प्रयास करते हैं।

**ईड गांव अपनी प्राकृतिक सुदंरता से यहां आने–जाने वालों का मन मोह लेता है। यहां का उच्च प्राथमिक विद्यालय भी अब साफ सुथरे प्रांगण और विभिन्न सामूहिक नवाचारी क्रियाकलापों के जरिये बच्चों को जिस तरह बांधे रखता है, इस गांव की खासियत में शुमार हो चुका है।**

विद्यालय से समुदाय की भागीदारी को बेहतर बनाने के लिए विद्यालय द्वारा भी काफी प्रयास किया जा रहा है। इसका उदाहरण स्कूल प्रबन्धन समिति की नियमित होने वाली बैठकों से भी देखा जा सकता है।

प्रबन्धन समिति के बैठकों की एक खास बात यह है कि इसमें अभिभावकों की भागीदारी के लिए विद्यालय द्वारा लिखित आमंत्रण पत्र भेजा जाता है। साथ ही जो अभिभावक पढ़े–लिखे नहीं हैं उन्हें प्रधानाध्यापक और अन्य शिक्षकों द्वारा गृह भ्रमण करके आमंत्रित किया जाता है। इसकी दूसरी खास बात यह है कि इसमें भागीदारी करने वाले सभी अभिभावकों को अपनी बात रखने का मौका दिया जाता है। प्रबन्धन समिति के साथ बेहतर समन्वय की वज़ह से विद्यालय को व्यवस्थित करने में भी काफी मदद मिली है।

पिछले वर्ष तक विद्यालय की साफ़–सफाई रखना एक प्रमुख चुनौती थी क्योंकि स्कूल बंद होने के बाद कुछ लोग विद्यालय में आकर शराब पीते थे और बोतल एवं बीड़ी–सिगरेट के टुकड़े छोड़कर चले जाते थे। चौहान जी ने इस बात को विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठकों में रखा, तो प्रबन्धन समिति के लोगों ने गाँव में इस पर चर्चा और गाँव वालों से विद्यालय को साफ़ रखने हेतु सहयोग माँगा। प्रधानाध्यापक की पहल और स्कूल प्रबन्धन समिति के सहयोग के परिणाम स्वरूप अब विद्यालय में इस तरह की घटनाएँ बंद हो गई है।

पड़ोस में नव निर्माणाधीन उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिए निर्माण सामग्री ले जाने हेतु विद्यालय के प्रांगण से रास्ता बनाया गया है। जिससे बच्चों की पढ़ाई में होने वाला व्यवधान आज कल विद्यालय की चिंता का प्रमुख कारण है। यहां के शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापक की कार्यकुशलता, शिक्षण के प्रति लगन शिक्षा में एक नई आशा का संचार करती है।

# अपनी लय में गतिशील

## राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुफारा, पुरोला

– संजय रावत

**प्राकृतिक** सौंदर्य का धनी कुफारा गाँव, ब्लॉक मुख्यालय से 12 किमी की दूरी पर बसा है। गाँव में 46 परिवार हैं और यहाँ की कुल जनसंख्या करीब–करीब 450 है। जौनसार बावर की सीमा से लगा होने के कारण इसकी बोली, खान–पान, रहन–सहन और रीति–रिवाजों पर जौनसार बावर की छाप साफ़ नजर आती है। पास के गाँव ढकाड़ा को मिलाकर करीब 12 परिवार हैं। ये परिवार जौनसार के कथियान–हटाड़ से पलायन करके काफी पहले यहाँ आकर बस गए थे। आज ये सभी यहाँ की माटी में रच बस गये हैं।

गाँव के एक छोर पर डलनू गाड से कुछ दूरी पर स्थित है प्राथमिक विद्यालय कुफारा। बाहर से देखने में एक सामान्य विद्यालय सा ही लगता है। परंतु जब आप यहाँ आकर रहेंगे तो इसकी कई सारी खूबियों से परिचित होंगे। सरकारी विद्यालय में इतना जीवन्त माहौल। विद्यालय प्रवास के दौरान कई घटनाओं ने रोमांचित किया। परंतु सबसे रोमांचकारी घटना थी, पाँचवी कक्षा की एक छात्रा और और उसकी अध्यापिका के साथ उसकी बातचीत। संयोग से उस दिन रोशन गड़ोही जी भी मेरे साथ थे। हमने देखा कि एक बच्ची दौड़ती हुई अपनी मैम के पास आई जो कहीं जाने की तैयारी कर रही थीं। बड़ी सहजता से उनसे बातचीत करने लगी।

*''मैडम आप आज देरी में आयी है और इतनी जल्दी जा रही है। अब हमें कौन पढ़ाएगा।''*

*''अरे यार मुझे बैंक में कुछ स्कूल का काम निबटाना है सो मुझे जल्दी जाना है।'' ''मैडम तो हम भी जल्दी ही घर चले जाते हैं।'' ''अरे तू तो मेरी भी नानी है।''*

यह संवाद सुनकर हमारे साथ गए एक शिक्षक बहुत हैरान हुए। उन्हें शिक्षिका का यह रवैया बेतुका लगा। और बोले–

*''यार इनके स्कूल के बच्चे बहुत ही बिगड़ गये हैं, डरते ही नहीं हैं,'' तुमने इन बच्चों को सिर चढ़ा रखा है। इनको तुमने बिगाड़ ही दिया है।'' जुबान पर एकदम आया–''काश सभी विद्यालयों के बच्चे ऐसे ही सिर पर चढ़ जाते तो मजा आ जाता।''*

1977 में स्थापित प्राथमिक विद्यालय कुफारा अपने करीब 37 साल की यात्रा के पड़ाव में है। अब तक विद्यालय को 11 शिक्षक–शिक्षिकाओं ने अपनी सेवाएँ देकर इसकी यात्रा को आगे बढ़ाने का काम किया है। और करीब 200 विद्यार्थी विद्यालय से कक्षा पाँच पास कर निकले हैं।

विद्यालय में इस समय 20 बालिकाएँ और 19 बालक अध्ययनरत हैं। पिछले पाँच सालों से विद्यार्थियों की संख्या का औसत 40 रहा है। गाँव वालों के साथ यहाँ की अध्यापिकाओं के लिए भी यह खुशी की बात है कि इस गाँव का कोई भी बच्चा बाहर पढ़ने नहीं जाता है। सिर्फ उनको छोड़कर जो गाँव से कहीं और चले गये हों। यकीनन इसमें शिक्षकों की बड़ी भूमिका है जिन्होंने विद्यालय में पठन–पाठन के स्तर को लोगों में विश्वास पैदा करने लायक बनाये रखा है। रोशनी गड़ोही और उनकी सहयोगी सरिता रावत इस विद्यालय की शिक्षिका हैं। रोशनी जी 2006 से और सरिता शिक्षा मित्र के रूप में 2011 से एक दूसरे के सहयोगी बनकर विद्यालय को गति दे रही हैं। रोशनी जी सरिता के लिये भी लगभग एक अभिभावक की भूमिका में

रहती हैं।

मेरे पिछले डेढ़ सालों के विद्यालय भ्रमण के अनुभवों के आधार पर विद्यालय की कुछ मुख्य बातों को प्रस्तुत करना चाहूँगा।

बच्चे और शिक्षकों के बीच के सम्बन्ध बहुत ही मधुर एवं सहज हैं। अमूमन विद्यालयों में बनाये रखा जाने वाला अनुशासन जो कि बच्चों को एक मशीन के तौर पर प्रस्तुत करता है, उसकी संभावना यहाँ काफी कम है। बच्चों और शिक्षिकाओं के बीच होने वाला संवाद एक पारिवारिक माहौल की तरह है। जहाँ शोरगुल भी है, शरारत भी है, अनुशासन भी है, प्यार भी है और जिम्मेदारी भी है।

विद्यालय का औचित्य एवं उसके सामर्थ्य का मूल्यांकन अकादमिक पढ़ाई से ही होता है। जिसमें यह विद्यालय अपना सर्वोत्तम दे रहा है। हमने जब यहाँ पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों से बातचीत कर विद्यालय अकादमिक स्थिति को और बेहतर से जानने का प्रयास किया, तो उन्होंने कहा – ''हमने अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा के लिए बाहर भी भेजना शुरू किया था। लेकिन हमने देखा कि वहाँ, की पढ़ाई–लिखाई किसी भी मामले में यहाँ से बेहतर नहीं है, तो हमने पुनः इसी विद्यालय में उन्हें भेजना शुरू कर दिया।''

**हमने अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा के लिए बाहर भी भेजना शुरू किया था। लेकिन हमने देखा कि वहाँ, की पढ़ाई–लिखाई किसी भी मामले में यहाँ से बेहतर नहीं है, तो हमने पुनः इसी विद्यालय में उन्हें भेजना शुरू कर दिया।**

**– अभिभावकगण**

अभिभावकों से संवाद पर पता चलता है कि वे अपने शिक्षकों पर विश्वास रखते हैं। गाँव वालों को लगता है कि हमारा यह विद्यालय अच्छा विद्यालय है। यहाँ पढ़ाई अच्छी होती है। यही कारण है कि यहाँ के अभिभावकों ने अपने बच्चों को कहीं और भेजने के बारे में सोचा ही नहीं है।

बाहर से देखने पर विद्यालय बहुत आकर्षक नहीं लगता है। विद्यालय की स्थापना जिस जगह पर हुई है, वह बहुत ही तंग है। इस कारण से बच्चों के खेलने के लिए मैदान भी बहुत छोटा है। कक्षा–कक्ष भी सामान्य ही है। पर जैसे–जैसे विद्यालय की गतिविधियों में शामिल होने लगते हैं, बच्चों और शिक्षकों को समझने–जानने लगते है। वैसे–वैसे विद्यालय संपूर्णता में नजर आने लगता है।

रोशनी गड़ोही जो कि विद्यालय परिवार की मुखिया हैं। उनके विद्यालय और घर में होने में कोई अंतर नहीं दिखता। वे जितनी सहज अपने घर पर रहती हैं उतनी ही विद्यालय में रहती हैं। वे तकरीबन एक अभिभावक की भूमिका में रहती हैं। वे डाँटती भी हैं और प्यार भी करती हैं। वे बच्चों के लिये पढ़ाई के अलावा अन्य अवसर ढूँढती हैं संसाधन के अभाव के बावजूद वह बच्चों को भ्रमण एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

गाँव वाले उन पर भरोसा करते हैं। हमेशा उनके साथ होते हैं। रोशनी गड़ोही जी इसका कारण बताती हैं कि हम हमेशा समय से आते हैं बच्चों को पूरी मेहनत के साथ पढ़ाते हैं। इसलिए गाँववाले हमारे काम पर भरोसा करते हैं।

एक बार मैडम के मन में विचार आया कि क्यों न बच्चों को कहीं घुमाने ले जाया जाय। क्योंकि कुफारा के ज्यादातर बच्चों ने अभी तक पुरोला भी नहीं देखा है। दूसरा कक्षा पाँच के बच्चों के लिये एक विदाई का तोहफा भी होगा। काफी बातचीत के बाद यह तय हो पाया कि बच्चों को लाखामंडल घुमाने ले जाया जाय। नजदीक भी है क्योंकि दूर जाने में खर्च भी ज्यादा होगा

साथ ही बच्चों को गाड़ी में यात्रा करने की आदत नहीं है। इसके साथ ही यह विचार आया कि कुछ अभिभावकों को भी आमंत्रित किया जाय। इससे अभिभावकों से नजदीकियां बढ़ाने का भी अवसर मिलेगा और उनके साथ रहने से बहुत सी चीजें संभल जाएंगे। भ्रमण के दिन 5 महिला अभिभावक साथ थीं और करीब 10 बच्चे। सभी अभिभावकों ने 150 रूपये का आर्थिक सहयोग दिया। जो कमी रही वो रोशनी गड़ोही जी ने पूरी की। मैं भी इनके साथ था। अपने गाँव से बाहर निकलना, गाँव से बाहर जाकर पहली बार अलग दुनिया देखना यहाँ के बच्चों को हमेशा याद रहेगा।

विद्यालय के साथ एक लंबा संवाद होने के बाद एक बात और महसूस हुई कि शिक्षिकाएँ बच्चों के साथ खेल एवं अन्य गतिविधियों में भी शामिल होती हैं जो बच्चों के और उनके बीच की दूरी को कम करने के लिये एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। जाड़ों की बात है मैं और मेरे साथी रवि कुफारा विद्यालय गये थे। कुफारा में ठंड काफी रहती है। हमने तसले में आग जलायी और अंदर सभी लोग तापने लगे। हम सभी आग के चारों ओर घेरा बनाकर बैठे थे। बच्चे गीत गाने लगे। जौनसार–बावर की संस्कृति का यहाँ काफी प्रभाव है सो गाने–बजाने के शौकीन भी काफी हैं। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मैडम भी बच्चों के साथ गीत गा रही थी और खुद आगे आकर बच्चों को स्टेप्स सिखा रही थीं जबकि मैडम खुद इस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से नहीं हैं।

क्या हुआ जो इनके पास ज्यादा टी.एल.एम. से भरा संदूक नहीं है। या इनके कमरों में ऐसा सामान नहीं है जो शिक्षण सामग्री के नाम पर ढेर लगाकर कोने में इकट्ठा किया गया है। ये बच्चों के साथ विद्यालय में जीती हैं और खुद ही में एक जीता जागता टी.एल.एम. है। इस प्रकार के अवसर एक रचनात्मक शिक्षक ही बच्चों के लिये पैदा कर सकता है। इस विद्यालय के शिक्षक किसी बैठक या बातचीत में अपने बारे में कुछ न बोले लेकिन उनके बच्चे और उनकी कक्षाओं में होने वाली गतिविधियां उनके बारे में बहुत कुछ बयाँ कर देती है।

अन्य सरकारी विद्लायों की तरह प्राथमिक विद्यालय कुफारा के सामने भी वही तमाम चुनौतियाँ हैं। साथ ही विद्यालय के पास खुद को आगे ले जाने की भरपूर संभावना भी है। यहाँ भौतिक संसाधनों को भी जोड़ना है। शिक्षकों को स्वयं को भी तैयार करना है। गाँव वालों को विद्यालय के और करीब आना है। इस तरह 37 सालों की इस अनवरत यात्रा को गति देने और बहुत दूर तक ले जाने का अति महत्वपूर्ण कार्य भी बाट जोह रहा है।

# जहाँ बच्चों के स्वर गाँव की गलियों में गूँजते हैं

## राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय–कांसी, चिन्यालीसौड़

**– विवेक सोनी व मेघा**

**लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती**
**कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।**

इन पंक्तियों में जो विश्वास है वह मन को साहस देता है। ठीक उसी तरह जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे विद्यालय जो बहुत सी चुनौतियों का सामना कर के भी बच्चों को बेहतरीन शिक्षा दे रहे हैं। हमें लगता है कि सरकारी स्कूल अन्य विद्यालयों की तुलना में ज्यादा मजबूत हैं क्योंकि वह दिखावे पर नहीं टिके हैं अपितु आत्मनिर्भर हैं। उदाहरण के लिए जब अन्य विद्यालयों में कोई कार्यक्रम होता है तो बहुत सारे लोग उसे देखने आते हैं परन्तु हमारे सरकारी स्कूल दिखाने के लिए नहीं कार्य करने के लिए हैं। वह फल की इच्छा के बगैर कार्य करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी शिक्षा का प्रमुख केंद्र राजकीय विद्यालय ही है। ये विद्यालय आने वाले समृद्ध समाज के निर्माण में अपना सहयोग निरंतर दे रहे हैं। इसके साथ–साथ सीखने–सिखाने में आने वाले नवाचारों को भी अपने में संजोने हेतु तत्पर हैं। शिक्षकों के द्वारा विद्यालय में बिना डर के एक सहज माहौल को बनाए रखना और अपनी जिम्मदारियों को सही मायने में निभाना समुदाय के साथ एक सराहनीय सम्बन्ध जैसी बातों को स्थापित करना राजकीय प्राथमिक विद्यालय–कांसी की एक खास विशेषता है।

जनपद उत्तरकाशी में विकासखण्ड चिन्यालीसौड़ है, जिसके बड़ेथी संकुल के अंतर्गत आने वाला राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कांसी की ब्लॉक मुख्यालय से दूरी लगभग 20 किलोमीटर है। कांसी गाँव के अधिकतर लोग कृषि व पशु–पालन से जुड़े हुए हैं। कुछ वर्ष पहले ही यह गाँव सड़क से जुड़ा है। कांसी गाँव तीन तरफ टिहरी जनपद की सीमाओं से घिरा हुआ है। पहले यह चिन्यालीगाँव की ग्रामसभा में ही सम्मलित था किन्तु वर्तमान में यह एक अलग ग्रामसभा है।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कांसी की स्थापना 25 फरवरी 1987 में हुई थी। यह विद्यालय पूर्व में सन 1966–1967 में बेसिक विद्यालय के रूप में खुला। बाद में यह राजकीय आदर्श विद्यालय बना जिसमें 1 से 8 तक की कक्षाएँ संचालित होने लगी। सन 2000 में एस.एस.ए. के तहत बेसिक विद्यालय अलग से निर्मित हआ जिसे राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कांसी के नाम से जाना जाता है।

वर्तमान समय में विद्यालय में सर्व शिक्षाअ अभियान के तहत 3 शिक्षक कार्यरत हैं। विद्यालय में सभी बच्चे टाई पहन कर आते हैं व विद्यालय के नाम का बिल्ला भी पहनते हैं, जो कि शिक्षकों के द्वारा बच्चों को अपनी तरफ से निशुल्क उपलब्ध करवाये गए हैं। भौगोलिक स्थिति देखें तो यह गाँव प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है। गाँव के तीन तरफ घना जंगल हैं और एक तरफ कृषि के लिए भूमि है। यहाँ पर मुख्य फसलों में धान व गेंहूँ है लेकिन कुछ वर्ष पूर्व तक यह गाँव प्याज की अच्छी खेती के लिए जाना जाता रहा है।

इस गाँव में विद्यालय की टन–टन–टन घंटी प्रातः अलार्म का

कार्य करती है। फिर सफेद स्कूल ड्रेस में जब 38 बच्चे प्रार्थना गाते हैं, तो उनके स्वरों की गूँज गाँव की गलियों तक सुनाई देती है।

इसी स्कूल में हमारी भेंट मनीषा से हुई। मनीषा इस विद्यालय में पढ़ने वाली एक 12 वर्ष की लड़की है। उसकी हड्डियों का विकास नहीं हो पा रहा है। जिससे उसकी हड्डियां काफी कमजोर है। मनीषा का शरीर 3–4 वर्ष के बच्चे की तरह है किन्तु उसका सिर 12 वर्ष की लड़की की तरह सामान्य है। पैर काम नहीं कर पाते हैं। वह केवल हाथों के बल खिसककर थोड़ी दूर तक चल पाती है। फिर भी उसके इरादों में बड़ी ताकत है, जो उसकी आँखों में और लेखन में दिखाई देती है, वह अपने आँखों से हमारे साथ लुकाछिपी खेल रही थी, वह अपनी आँखें कहीं और ले जाती फिर चुपके से हमारी तरफ देखती और मुस्करा देती, ये सिलसिला काफी देर तक चलता रहा, इतने में प्रभारी प्रधानाध्यापक विजय सिंह चौहान आये और मनीषा से प्यार से पूछा कि खाना कैसा लगा और ध्यान से उसे उठाकर कक्षा 6 के कक्ष में ले गए। जब वह प्रणाम कहती है तो गुरूजी लोग खुशी से मुस्कुरा देते हैं। विद्यालय में ऐसा वातावरण है कि मनीषा के प्रति सभी प्यार व सम्मान से पेश आते हैं। वह बैठे–बैठे ही सारे काम करती है उसका लेख भी उसकी आँखों की तरह सुंदर लगता है।

**एक अच्छी कक्षा वह होती है जिसमें तीन चीज़ें निरंतर चलती रहें, पहले तो बच्चों की सवाल पूछने की क्षमता, दूसरा शिक्षक कितने सवालों को उभार सकता है और तीसरा बच्चे आपस में कितना सीखते हैं।**

मनीषा से सब प्रेम करते हैं। विजय सिंह चौहान जिस आत्मीयता से मनीषा से बात करते हैं उसी तरह वह सभी बच्चों से पेश आते हैं। उनकी आवाज़ बुलन्द है। वह एक पिता की दृष्टि से इस स्कूल को आगे ले जाते हैं। जब बच्चे उनकी कक्षा में होते हैं तो ऐसा लगता है कि पिताजी पढ़ा रहे हैं। जब भी किसी बच्चे को दिक्कत होती है तो वह काफी भावुक हो उठते हैं। उस बच्चे को अपने परिवेश से जोड़ कर समस्या का समाधान करते हैं। यह काम वो इतनी सरलता से करते हैं कि बच्चों को भी उनसे कुछ पूछने के लिए सोचना नहीं पड़ता है। उनकी एक अच्छी बात यह है कि वह जानते हैं कि बच्चा जब विद्यालय में आता है, तो बहुत कुछ लेकर आता है। एक कोरे कागज की तरह नहीं होता जिसमें हम रंग भरते हैं।

उनका मानना है कि एक अच्छी कक्षा वह होती है जिसमें तीन चीज़े निरंतर चलती रहें, पहली तो बच्चों की सवाल पूछने की क्षमता, दूसरा शिक्षक कितने सवालों को उभार सकता है और तीसरा बच्चे आपस में कितना सीखते हैं और सिखाने में हम कितने मद्दगार होते हैं।

ऐसे ही उत्साही श्री मुनेन्द्र उनियाल और श्री विजय चाँद रमोला जी भी हैं। प्रभारी प्रधानध्यापक श्री विजय सिंह चौहान एक कुशल कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति हैं, वह स्वयं भी अनुशासन में रहते हैं और सभी का ध्यान रखते हैं। उनकी कुशलता उनके विद्यालय के बच्चों की साफ़–सुथरी ड्रेस और उनके मधुर व्यवहार से समझी जा सकती है। उनका कक्षा शिक्षण उतना ही रोमांचक है, जब हमने उनकी गणित की कक्षा–शिक्षण का अवलोकन किया तो पाया कि वह बहुत सुंदर माध्यम से बच्चों को अवधारणाएँ समझा रहे हैं। बच्चे उनके शिक्षण के दौरान स्वयं को सहज महसूस कर रहे थे। वह सभी बच्चों की प्रतिभागिता का भी ध्यान रख रहे थे। बच्चों को अमूर्त बिन्दुओं के बारे में समझाने के लिए गाँव से जुड़ी बातों को विषय से जोड़ते हैं। जिससे बच्चे विषय को सुगमता से समझ लेते हैं। वह मुख्यतः गणित व विज्ञान पढ़ाते हैं इसके साथ–साथ अपने साथी अध्यापकों को भी अन्य विषयों में भी मदद करते हैं।

मुनेन्द्र उनियाल जी अंग्रेजी व संस्कृत विषयों को पढ़ाते हैं इसके साथ–साथ वह विद्यालय की सभी गतिविधियों को भी बहुत प्रभावी तरीके से संचालित करते हैं। इसके अलावा वह

बच्चों को सांस्कृतिक गतिविधियों से भी जोड़ते हैं। वह टी.एल.एम. बनाने में व उसे प्रभावी रूप से कक्षा में प्रयोग करने में भी रूचि रखते हैं।

विजय चन्द्र रमोला जी मुख्यतः सामाजिक विषय व हिंदी पढ़ाते हैं। बच्चों को विषय–वस्तु अच्छी तरह से समझाने के लिए परिवेशीय उदाहरणों का अधिक प्रयोग करते हैं। वह शारीरिक शिक्षा पृष्ठभूमि से हैं और व्यायाम व योग भी बच्चों को सिखा रहे हैं। बच्चे प्रतिदिन प्रार्थना सभा के पश्चात योगासन करते हैं। अंतिम वादन में रमोला जी के द्वारा बच्चों को ड्रम की बीट के साथ व्यायाम करवाते हैं। बच्चे बहुत सुंदर व सटीक तरीके से व्यायाम करते हैं साथ ही साथ रमोला जी प्रेमभाव से सहज अनुशासन बनाने में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। शिक्षक और बच्चों का जुड़ाव काफी अच्छा है।

यह विद्यालय आजकल प्रातः 9:30 पर प्रार्थना सभा के साथ प्रारम्भ होता है। प्रार्थना सभा में वंदना प्रतिज्ञा, समूह–ज्ञान, राष्ट्रगान के पश्चात छात्र–छात्राओं द्वारा आपस में सामान्य–ज्ञान के प्रश्न किये जाते हैं, जिसमें सभी शिक्षक विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं। सभी कक्षाओं की उपस्थिति एक साथ प्रार्थना–सभा में ही दर्ज की जाती है।

कक्षा में प्रवेश करने पर पता चलता है कि वहाँ पर शिक्षकों के लिए कुर्सी नहीं रखी गयी है। शिक्षकों का मानना है कि वह बच्चों के साथ बैठकर पढ़ाना पसंद करते हैं और इससे बच्चों और शिक्षकों के मध्य अच्छे रिश्ते भी बनते हैं। बच्चों को और करीब से समझने में मदद भी मिलती है। ऐसे में किसी का वर्चस्व प्रदर्शित नहीं होता है साथ ही इससे बच्चों के मन में समानता का भाव भी पनपता है।

कक्षा में प्रवेश के पश्चात कक्षा शिक्षण से पूर्व खुशनुमा माहौल बनाया जाता है, जिनमें बच्चों के अनुभवों को शामिल किया जाता है। इस विद्यालय के तीनों शिक्षक कक्षा में अपनी पूर्व तैयारी के साथ जाते हैं जिसका जीवंत उदाहरण उनकी शिक्षक डायरी है जिसमें प्रतिदिन कक्षा में क्या पढ़ाया जाना है वह एक दिन पूर्व ही तय कर लेते हैं और शिक्षक अपनी तैयारी और शिक्षण सामग्री के साथ ही कक्षा में जाते हैं। यहाँ के शिक्षकों के द्वारा बच्चों को विषयवस्तु से सम्बन्धित स्थानीय परिवेशों के माध्यम से अधिक से अधिक समझाने की कोशिश की जाती है जिससे बच्चों की समझ मजबूत हो पाए और वह अपनी समझ को अपने दैनिक जीवन में भी जोड़ पायें।

चौथे पीरियड के पश्चात विद्यालय में मध्यांतर होता है इसी दौरान सभी बच्चे विद्यालय के गेट पर लगे नल पर अपनी प्लेट और हाथ धुलने जाते हैं। बच्चों के लिए वहाँ पर साबुन की व्यवस्था की गयी है। इसके बाद सभी बच्चे टाट–पट्टी बिछाकर पंक्तियों में एक साथ बैठते हैं। अच्छी बात यह है कि भोजन बाँटने में शिक्षक स्वयं भोजन माताओं का सहयोग करते हैं। जब सभी की थाली में भोजन परोसा जाता है तब उसके बाद सभी बच्चे भोजन से जुड़ी एक प्रार्थना करते हैं। साथ ही साथ मनीषा के लिए शिक्षक स्वयं भोजन लेकर जाते हैं। भोजन करने के पूर्व और पश्चात उसके हाथ भी धुलवाते हैं। इसके बाद सभी बच्चे अपनी–अपनी प्लेटें धुलकर एक नियत स्थान पर रखते हैं। विद्यालय में वाटर प्यूरीफायर लगाया गया है जिसे प्रतिदिन प्रातः भोजन माताओं द्वारा भरा जाता है। सभी बच्चे व शिक्षक पीने के पानी के लिए इसका प्रयोग करते हैं। इसके बाद बच्चों को खेलने के लिए समय दिया जाता है।

अंतिम पीरियड में सभी कक्षाओं के बच्चे विद्यालय के मैदान में एकत्र होते हैं और सीधी पंक्तियों में ड्रम के साथ व्यायाम करते हैं। सभी शिक्षक उनका मार्गदर्शन करते हैं। व्यायाम के बाद बच्चों को अगले दिन के लिए सामान्य निर्देश दिये जाते हैं। अंत में वन्दना के साथ स्कूल की छुट्टी हो जाती है।

प्रतिदिन शिक्षकों के द्वारा बरामदे में दीवार पर बने ब्लैक–बोर्ड पर दैनिक समाचार लिखा जाता है जिन्हें सभी बच्चों के द्वारा पढ़ा जाता है और इस समाचार को दिन भर बोर्ड पर लिखा रहने दिया जाता है ताकि सभी बच्चे अपने समय के अनुसार इसे पढ़ पायें और लाभ ले पायें।

विद्यालय में 'मन की बात' नामक पेटी को तीनों कक्षाओं के बाहर बने बरामदे में रखा गया है। इसमें सभी बच्चों को स्वतंत्रता दी गयी है। वे अपनी मन की बात लिखकर इसमें डालते हैं और फिर शिक्षकों द्वारा उसे प्रतिदिन चेक कर बच्चों की बातों अथवा सुझावों पर विचार किया जाता है।

# जहाँ लगते हैं उम्मीदों को पंख

## राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय देवजानी, मोरी

– चंदन, शैलेन्द्र व प्रेमचंद

**ब्लॉक** मुख्यालय मोरी से पुरोला की ओर जाते हुए 16 किमी दूर ब्यारा बैंड है। वहीं से चीड़ के घने जंगल में नीचे उतरने के दो रास्ते हैं। 3.5 किमी की पैदल यात्रा करके राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय देवजानी पहुंचते हैं। पहले रास्ते में डाण्डागाँव पड़ता है। दूसरे रास्ते में चीड़ के घने वृक्ष पड़ते हैं। 2 किमी नीचे उतरने पर केदार गंगा बहती है जिस पर एक पुल बना है। उसके बाद खेतों के बीच से होकर गाँव पहुँचते हैं, उसके बाद विद्यालय के प्रांगण में प्रवेश करते हैं। इस विद्यालय के लिये खरसाड़ी से एक मोटर मार्ग देवजानी के लिये जाता है। जो अभी निर्माणाधीन है। पर लोग इस रास्ते से पैदल आवाजाही करते हैं।

इस विद्यालय में कुल नामांकित छात्रों की संख्या 97 हैं । जिनमें से 70–75 प्रतिशत छात्र प्रत्येक दिन विद्यालय आते हैं। शिक्षकों की कुल संख्या चार है। जनक सिंह राणा यहाँ के प्रधानाचार्य हैं। इनके अतिरिक्त प्रभुदयाल नामदेव, दयाल सिंह एवं मानचन्द वैरागी शिक्षक हैं। विद्यालय के भवन की ओर दृष्टि डालें तो किचन स्टोर एवं अतिरिक्त कक्ष के अलावा पाँच कमरे निर्माणाधीन हैं। निर्माणाधीन कमरों में से तीन कक्षा कक्ष के लिए हैं। 1 कक्ष प्रधानाचार्य के लिए है एवं एक कक्ष कंप्यूटर शिक्षा के लिए।

**इस विद्यालय के शिक्षकों का आपसी समन्वय कमाल का है। वह शैक्षिक गतिविधियों से लेकर छात्र–छात्राओं के स्तर में सुधार लाने की प्रक्रिया तक को आपसी बातचीत एवं एक–दूसरे के अनुभवों को साझा करके पूरा करते हैं। विभिन्न परिवेशों से आने के बावजूद भी उनके आपसी सहयोगात्मक व्यवहार को देखकर लगता है जैसे वे एक ही परिवार के सदस्य हों।**

हमने जब उन कारणों को जानने का प्रयास किया जिसके कारण यहाँ छात्रों की संख्या काफी है, तो पहला कारण यह मिला कि यहाँ के शिक्षक नियमित रूप से अध्यापन का कार्य करते हैं। जिससे स्थानीय छात्र–छात्राओं का पढ़ाई के प्रति लगाव बढ़ रहा है।

दूसरा कारण बड़ा ही अनोखा एवं बेमिसाल है। यहाँ के शिक्षक 'स्कूल चलो अभियान' के तहत अपने–अपने सेवित क्षेत्रों के तहत पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्रों की एक सूची बनाते हैं। जिन छात्रों का नामांकन सत्र प्रारम्भ के पहले सप्ताह तक नहीं होता उस बच्चे के घर जाकर अविभावकों से मिलते हैं और उन्हें पढाई का महत्व समझाते हैं इसलिए यहां अब शत–प्रतिशत नामांकन हो रहा है। इस प्रकार के प्रयास करने से यहाँ के शिक्षकों की समुदाय में एक आदर्श पहचान बनी है जिसका पूरा

लाभ बच्चों को मिल रहा है।

अक्सर विद्यालय के शिक्षक विद्यालय के पश्चात छात्रों को पहचानते भी नहीं हैं, वहीं इस विद्यालय के शिक्षकों का संबंध बच्चों के भावनात्मक स्तर तक का है। वह बच्चों के रुचि व्यवहार का भी पूरा ध्यान रखते हैं। विद्यालय के बाद की छात्रों गतिविधियों की जानकारी उनके अभिभावकों से लेते रहते हैं। इस क्रम में यदि बच्चों की कोई शिकायत होती है तो उसका निराकरण प्रेमपूर्वक तरीके से करते हैं।

इस विद्यालय के शिक्षकों का आपसी समन्वय कमाल का है। वह शैक्षिक गतिविधियों से लेकर छात्र–छात्राओं के स्तर में सुधार लाने की प्रक्रिया तक को आपसी बातचीत एवं एक–दूसरे के अनुभवों को साझा करके पूरा करते हैं। विभिन्न परिवेशों से आने के बावजूद भी उनके आपसी सहयोगात्मक व्यवहार को देखकर लगता है जैसे वे एक ही परिवार के सदस्य हों।

रोज की चार किलोमीटर की चढ़ाई एवं उससे होने वाली शारीरिक थकान से बचने के लिए शिक्षक विद्यालय परिसर में ही रहते हैं। इसका एक लाभ तो यह है कि विद्यालय हमेशा बिना किसी प्रकार की बाधा के अपने नियत समय पर शुरू होता है, साथ ही छुट्टी के दिनों में भी ये अध्यापक छात्रों की समस्याओं के निराकरण हेतु विद्यालय में उपस्थित होते हैं।

इस विद्यालय की इन्हीं खूबियों के कारण अन्य गाँवो से भी छात्र छात्राएँ यहाँ पढ़ने आते हैं। जिसके कारण विद्यालय में छात्र छात्राओं की संख्या अधिक है।

# सहेजना उम्मीदें...

उत्तराखण्ड में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन करीब पिछले दस बरसों से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहा है। इस दौरान हमें काफी सारे स्कूलों और शिक्षकों से जुड़ने का मौका मिला। हमने देखा कि कोई शिक्षक कई किलोमीटर की चढ़ाई रोज चढ़कर स्कूल पहुंचता है। किसी ने स्कूल को बच्चों के सीखने का, उनकी खिलखिलाहटों का ठीहा बना रखा है। किसी ने पढ़ाने के नये–नये ढंग अपनाए हैं।

जहां ज्ञान किताबों से बाहर निकलकर आसपास के परिवेश में उड़ता फिरता है। बच्चे घर से स्कूल आते वक्त न जाने कितनी जानकारियां समेटकर लाते हैं और शिक्षकों से साझा करते हैं। कोई कूड़ा बीनते बच्चों का हाथ पकड़कर स्कूल ले आती है। उन्हें नहलाती है, धुलाती है और अपने हाथों से खाना खिलाती है। उसके बाद पढ़ने की शुरुआत करती है। कहीं तो माता–पिता की शिक्षक पर इतनी आस्था है कि वो कह दें तो आधी रात को पूरा गांव खड़ा हो जाए। शिक्षकों के समुदाय के साथ पारिवार जैसे रिश्ते बन चुके हैं। कोई शिक्षक बच्चों को स्कूल लाने के लिए खुद साइकिल से निकल पड़ता है। इन्हें किसी ईनाम, प्रशंसा, किसी प्रमोशन की चाह भी नहीं। उल्टे कोई इनकी प्रशंसा करे तो संकोच से गड़ जाते हैं।

ऐसी ही उम्मीद जगाती कोशिशों को इकट्ठा करके उनकी रोशनी उनकी खुशबू को और दूर तक पहुंचाने का प्रयास है उनकी कहानियों का यह संकलन। ऐसा नहीं है कि हम उत्तराखण्ड के हर उस शिक्षक या स्कूल तक पहुंच पाये हैं जहां, खुद की इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास के बल पर उम्मीदें रची जा रही है। कुछ लोगों तक पहुंच पाने का यह हमारे साथियों का पहला और छोटा सा प्रयास भर है।

# बच्चों का मनोरम आनंदालय

## राजकीय प्राथमिक विद्यालय सैंज, भटवाड़ी

**– गणेश बलोनी व कृष्ण कुमार**

**उत्तरकाशी** के भटवाड़ी ब्लॉक का टकनौर क्षेत्र प्राकृतिक रूप से समृद्ध है। कई आपदाओं के बाद भी यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य जस का तस बना हुआ है। इसी क्षेत्र में एक गाँव है सैंज उत्तरकाशी गंगोत्री मार्ग पर। ब्लॉक मुख्यालय से लगभग 4 किमी पहले सड़क के ऊपरी भाग पर एक प्रवेश द्वार बना दिखाई देता है। जिस पर लिखा है ग्राम पंचायत सैंज। ठीक इसके सामने एक साइनबोर्ड लगा है, जिस पर चार विद्यालयों की सड़क मार्ग से पैदल दूरी अंकित है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय सैंज यहाँ से 3 किलोमीटर दर्शाया गया है। सड़क मार्ग से ही चढ़ाई शुरू हो जाती है और विद्यालय पर जाकर ही समाप्त होती है। सैंज गाँव सन् 1991 के भूकम्प में अत्यधिक प्रभावित हुआ था। जिसके प्रमाण आज भी यहाँ मौजूद हैं। इस भूकम्पीय आपदा ने यहां के पारम्परिक भवनों को क्षतिग्रस्त किया। आज यहाँ पर कुछ ही भवन पुरानी कला का परिचय देते हुए दिखाई देते हैं। इनकी जगह अब टीन शेडनुमा मकानों ने ले ली है जो कि उस समय की आवश्यकता थी।

इसी त्रासदी में सन् 1950 में स्थापित राजकीय प्राथमिक विद्यालय सैंज भी भूकम्प की भेंट चढ़ गया। जिससे यहां पर पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं की मुश्किलें बढ़ने लगी। इसका प्रभाव बच्चों के अध्ययन पर भी पड़ने लगा था। इस भयंकर त्रासदी के बाद 1994 में जगदम्बा पाण्डे जी की यहाँ नियुक्ति हुई। 1992 में बी.टी.सी. से प्रशिक्षित जगदम्बा जी की प्रथम नियुक्ति 1993 में रा.प्रा. विद्यालय जसपुर में हुई थी। जब वह वहाँ से स्थानान्तरित होकर यहाँ आई तो उन्होंने पाया यहाँ उनके लिए चुनौतियों का अम्बार है। विद्यालय भवन के नाम पर भूकम्प के प्रभाव से टूटा–फूटा लगभग अवशेष के रूप में पड़ा एक कमरा। शैक्षिक स्तर से पिछड़ रहे बच्चे। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वे अभिभावकों से ताल–मेल स्थापित कर ज़र्जर विद्यालय एवं शैक्षिक व्यवस्था को पुनः पटरी पर लाने के प्रयास में जुट गईं।

जगदम्बा जी के आने के दो वर्ष बाद सुषुमलता जी अपनी प्रथम नियुक्ति के तौर पर यहाँ आईं। तब से लेकर आजतक लगभग 20 वर्षों से यह दोनों शिक्षिकाएँ यहाँ शिक्षण का कार्य कर रही हैं। कुल 26 छात्र–छात्राओं की संख्या वाले राजकीय प्राथमिक विद्यालय सैंज तक आने के लिए सबसे बड़ी समस्या है तीन किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई जिसे यहाँ की अध्यापिकाओं ने अपने जीवन पर कभी हावी नहीं होने दिया। दोनों हमेशा समय से विद्यालय पहुँचती हैं। अपने कार्य में लग जाती हैं। उनके कार्य करने का ढंग बड़ा ही अनोखा है। दोनों शिक्षिकायें पढ़ाने–सिखाने की जटिल प्रक्रिया को बड़ी सरलता एवं स्वाभाविक तौर से संपन्न करती हैं। वे बच्चों के साथ ज़मीन पर बैठकर बड़ी सहजता एवं मित्रवत तरीके से बच्चों के साथ बातचीत करती हैं, जिसका प्रभाव बच्चों पर भी स्पष्टतः देखा जा सकता है। जिस देश में बच्चे स्कूल तक नहीं जाना चाहते हैं, वहीं इस विद्यालय के बच्चे तब–तक विद्यालय में रुकते हैं, जब तक दोनों शिक्षकाएँ विद्यालय में उपस्थित होती हैं। आधे दिन के स्कूल के दिन भी बच्चे जल्दी घर जाने को तैयार नहीं होते कहते हैं –''मैडम जी हम हल्ला नहीं करेंगे और चुपचाप यहीं बैठकर अपना काम करेंगे।'' यह वाक्य दर्शाता है शिक्षक एवं बच्चों के बीच पनप रहे अपनेपन को। जिसके अभाव में शिक्षण जैसा नैसर्गिक कार्य संपन्न हो ही नहीं सकता है।

बच्चों एवं अभिभावक के साथ दोनों शिक्षिकाओं का आपसी तालमेल गजब का है। वह कार्यालयी संबंध को दरकिनार कर दो सहेलियों की तरह आपस में व्यवहार करती हैं। जिससे दोनों एक–दूसरे से अपनी कठिनाइयों को बेझिझक साझा कर पाती हैं। उन्हें बड़ा बोझिल एवं उबाऊ लगता है कि एक सूचना आदान–प्रदान का कार्य करे और दूसरा पढ़ाए। इसलिए दोनों मिलकर बच्चों को पढ़ाती हैं। कार्यालय से संबंधित किसी मुश्किल समस्या का निबटारा वे दूसरे विद्यालयों की सहयोगियों के साथ मिलकर निपटा लिया करती हैं। विद्यालय प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष बताते हैं कि ''जब–जब इन दोनों शिक्षिकाओं का प्रमोशन हुआ गाँव के लोगों व अभिभावकों ने दोनों अध्यापिकाओं से निवेदन किया कि वे हमारे बच्चों को छोड़कर न जाएं। गांववासियों का प्यार व विश्वास देखकर अपना प्रमोशन बच्चों के हित में छोड़ा और इसी विद्यालय में रहना स्वीकार किया।''

इस विदयालय की शुरूआत भी अनोखे ढंग से होती है। अध्यापिकाएं बच्चों से पहले विद्यालय आती हैं। आकर वह बोर्ड पर पूरे दिन की कार्य की रूप–रेखा लिख देती हैं। जिसे बच्चे अपने तरीके से उन कार्यों को संपादित करते हैं। यह कार्य होता है, प्रार्थना करना एवं करवाना। जिसमें समाचार, समूहगान, कहानी, एवं कविता का पाठ करना। विद्यालय की साफ़–सफ़ाई का ध्यान रखना। विद्यालय की पूरी गतिविधियों को बच्चे अपने ही ढंग से पूरा करते हैं। शिक्षिका का कार्य मात्र सुगमकर्ता का होता है। उनका मानना है कि बच्चे जब स्वविवेक से कार्य करते हैं तो उनमें श्रम के प्रति महत्व एवं सहयोग की भावना का विकास होता है।

गतिविधि के अलावा विद्यालय में शिक्षण कार्य सत्र टी.एल.एम. द्वारा संपादित किया जाता है। जो कि कुछ बने–बनाए हैं। तथा कुछ का निर्माण अध्यापिकाओं ने बच्चों के सहयोग से बनाया है। बच्चों की सुविधा के लिए दीवारों को रंग कर उन पर गिनती, पहाड़े, शरीर के अंगों के नाम चित्रों के साथ हिन्दी एवं अंग्रेजी की वर्णमाला दी गई है। जिनका उपयोग बच्चे अपनी रुचि के अनुसार करते हैं।

विद्यालय में केवल पढ़ाई एवं अनुशासन का ही माहौल नहीं है। उनके खेलने की भी समुचित व्यवस्था की गई है। यहां अन्य विद्यालयों की तरह वह पारंपरिक रवैया नहीं अपनाया जाता कि बच्चे को घर से आते ही पढ़ने के लिए बिठा दिया जाय। पहले सब मिलकर बाल गीत गाते हैं। तत्पश्चात् बच्चे अपनी रुचि का खेल खेलते हैं। खेलों में प्लास्टिक के सी–सॉ झूले हैं जो बच्चों को काफी आकर्षित करते हैं। कुल मिलाकर यहाँ पढ़ाने एवं सिखाने की क्रिया को मनोरंजक तरीके से संपन्न किया जाता है। शिक्षा एवं बच्चों के निर्माण में लगे यहाँ के शिक्षक अपने को किसी दायरे में बाँध कर नहीं रखते। वह सामाजिक सरोकारों से भी जुड़ते हैं। जब भी समाज पर कोई विपदा आती है यह लोग हमेशा लोगों की मदद के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे कई बेहतर रिश्तों की बावत बहुत से वाकये इस विद्यालय के विद्यालय प्रबन्धन समिति के लोग बताते हैं। वर्ष 2013 की भीषण आपदा के दौरान कुछ शिक्षकों के साथ इस विद्यालय के शिक्षकों ने भी अपने विद्यालय को खोले रखा। अभिभावकों ने शिक्षकों के रहने का प्रबन्ध गाँव में ही किया। साथ ही विद्यालय के लिए आवश्यक पठन सामग्री व अन्य जरूरी सामान के साथ शिक्षिकाओं का सामान लेने के लिए गांव के लोग गये और टूटे फूटे पहाड़ी रास्तों से पैदल पार कर गाँव तक पहुँचाया। अभिभावक बताते हैं कि शिक्षिकाओं ने उस वक्त अपने घर परिवार की चिन्ता किए बगैर विद्यालय को अतिरिक्त समय देकर बच्चों को पढ़ाई के अलावा अन्य क्रियाकलाप जारी रखे। जिससे बच्चे उस भीषण आपदा के भय से निकलकर सामान्य दिनचर्या में आ सके। अभिभावकों का कहना है कि उस दौरान विद्यालय सुबह आठ बजे से सायं चार बजे तक लगता था वो भी बच्चों के कहने पर। उनका कहना है कि हमारे बच्चे हम से ज्यादा अपनी मैडम और सर से प्यार करते हैं।

**जिस देश में बच्चे स्कूल तक नहीं जाना चाहते हैं, वहीं इस विद्यालय के बच्चे तब–तक विद्यालय में रुकते हैं, जब तक दोनों शिक्षकाएँ विद्यालय में उपस्थित होती हैं। आधे दिन के स्कूल वाले दिन भी बच्चे जल्दी घर जाने को तैयार नहीं होते और कहते हैं –''मैडम जी हम हल्ला नहीं करेंगे और चुपचाप यहीं बैठकर अपना काम करेंगे।''**

# एक स्कूल समुदाय का

## राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, सुनाली, पुरोला

**– रोहिताश व प्रतीक**

**एन.सी.एफ** 2005 में इस बात का संदर्भ मिलता है कि एक अध्यापक को न केवल पढ़ाने में ही समर्थ होना चाहिए बल्कि उसको बच्चों के परिवेश और उनके माता–पिता के बारे में भी समझ होनी चाहिए। ऐसी समझ तो तभी बन सकती है, जब अध्यापक और समुदाय का सम्बन्ध परस्पर मधुर हो। यदि कोई ऐसा विद्यालय हो जहाँ समुदाय की एक आदर्श सहभागिता देखने को मिले तो वह विद्यालय निश्चय ही बेहतर होगा। ऐसा ही एक स्कूल पुरोला ब्लॉक में उच्च प्राथमिक विद्यालय सुनाली है। जहाँ विद्यालय में समुदाय की आदर्श सहभागिता देखने को मिलती है।

रा.उ.प्रा.वि. सुनाली पुरोला से लगभग पाँच किलोमीटर की दूरी पर है। सड़क से थोड़ी चढ़ाई चढ़ने पर आप विद्यालय पहुँच सकते हैं। विद्यालय पहुँचते ही दो भवन दिखते हैं, हालाँकि कक्षाएँ एक में ही संचालित होती हैं। विद्यालय प्रांगण साफ़–सुथरा है, साथ ही विभिन्न तरह के पौधे और वृक्ष भी हैं। वर्तमान में इस विद्यालय में तीन शिक्षक कार्यरत हैं– सत्यपाल जी (प्रधानाध्यापक), चंद्रभूषण बिजल्वान जी एवं भजन सिंह रावत। तीनों ही अध्यापक बड़ी तल्लीनता के साथ अपनी कक्षाओं में बच्चों के साथ पठन–पाठन में व्यस्त रहते हैं। वे बच्चों से परस्पर बातचीत करते हैं। बच्चे बीच–बीच में शिक्षकों से प्रश्न भी करते हैं–इससे कक्षा का माहौल बहुत सरल और संवाद से भरपूर दिखाई देता है।

कक्षा के बाद सत्यपाल जी से मुलाकात हुई। यूँ तो हम पहले भी कई बार उनसे मिल चुके हैं और विद्यालय में भी आ चुके हैं परन्तु इस बार का उद्देश्य कुछ अलग है। उनसे विद्यालय के बारे में बातचीत और उनके एवं बाकी शिक्षकों से अनौपचारिक साक्षात्कार की बात पहले ही हो चुकी थी। सो वे भी प्रतीक्षा कर रहे थे। सत्यपाल जी हमेशा ही बड़े खुले दिल से स्वागत करते हैं। उनके विद्यालय में आना और बच्चों से बातचीत करना एक अलग ही अनुभव होता है। सत्यपाल जी लगभग 11 वर्षों से इस विद्यालय में कार्यरत हैं। ये हमारे लिए भी एक अच्छा

अवसर था। उनके शैक्षिक जीवन से जुड़े हुए पहलुओं को जानने का मौका मिल रहा था।

सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं पर बातचीत से पता चला कि समस्याएँ वही हैं कक्षा 6 तक भी बच्चे पढ़ने–लिखने में असमर्थ होते हैं, जो कि बच्चों के सीखने–समझने में एक बड़ा अवरोध है। यह जानकर भी अच्छा लगा कि सत्यपाल जी और साथी शिक्षकों को समस्या की जानकारी के साथ–साथ उनसे पार पाने की समझ भी है। जब उन्होंने बताया कि वह कक्षा–कक्ष में बातचीत को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं और इस बात पर ख़ास ध्यान देते हैं कि बच्चे बोलें और बातचीत करें, तो हमें लगा कि समस्या का लगभग आधा समाधान तो हो ही गया है। उन्होंने यह भी बताया कि क्षेत्रीय भाषा के शब्दों के प्रयोग पर भी वह कोई मनाही नहीं करते और शिक्षक होने के नाते छात्रों को उनकी भाषा से किताब की समझ तक ले जाना उनकी ज़िम्मेदारी है। उनका यह मानना है कि बच्चों में बोलने की झिझक नहीं होनी चाहिए। भाषा हो या गणित, परस्पर संवाद, सीखना–सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है, बच्चों के बोलने पर पाबंदी, उनकी सीखने की प्रतिभा को हत्तोत्साहित करता है। एक अच्छी बात यह भी थी कि भाषा या फिर सीखने–सिखाने से जुड़ी इन मूलभूत बातों (जो कि बहुत गंभीर समस्या भी है) को ये शिक्षक समझते हैं और अपने स्तर पर

काम भी कर रहे हैं। बातचीत से पता चला कि इस तरह की समस्याओं के बारे में साथी शिक्षक साथ बैठकर चर्चा करते हैं। जिससे अपनी समझ के विस्तार के साथ–साथ समस्या का समाधान ढूँढ़ना भी आसान हो जाता है।

इसी प्रक्रिया में शिक्षक–छात्र शिक्षण अधिगम सामग्री प्रयोग द्वारा सिखाने जैसी विधियों का भी प्रयोग किया जाता है। विद्यालय में बच्चों के साथ मिलकर बनाये गए टी.एल.एम. के साथ–साथ विज्ञान शिक्षा से जुड़ी सामग्री जैसे कि वर्नियर कैलीपर्स, लिटमस पेपर, लेंस आदि भी उपलब्ध है। जिनकी मदद से बच्चों को विषय के प्रति मूलभूत अवधारणा बनाने में आसानी होती है। सत्यपाल जी ने बताया कि विद्यालय के किसी भी कोष में धनराशि बच जाने पर उसका प्रयोग बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री खरीदने में किया जाता है।

अपने स्कूल के सफलतापूर्वक संचालन के पीछे सत्यपाल जी किसी एक कारण को नहीं मानते। इसका श्रेय वह उपयुक्त संसाधन, अध्यापकों का सहयोग, और समुदाय की निरंतर सहभागिता को देते हैं। उनका मानना है कि स्कूल के अच्छे प्रदर्शन के पीछे का कारण किसी एक पर आश्रित नहीं होता अपितु सभी पहलुओं के उचित योगदान से होता है। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए वह कहते हैं कि हमारे विद्यालय के शिक्षक समय–सारणी के अनुसार नहीं पढ़ाते अपितु कक्षा की आवश्यकता के अनुसार पढ़ाते हैं जिसके कारण कभी–कभी कक्षा के निर्धारित समय से ज्यादा पढ़ा देते हैं। उनके विद्यालय के अध्यापक कक्षा में शिक्षण से पहले तैयारी कर के जाते हैं इससे उनके साथ बच्चों को भी विषय में पकड़ बनाने में सहायता मिलती है। कक्षा अध्यापन में यह तैयारी ही महत्वपूर्ण है जिसके कारण शिक्षण अधिगम एक संयोजित तरीके से हो पाता है।

**हमारे विद्यालय के शिक्षक कभी समय–सारणी के अनुसार नहीं पढ़ाते अपितु कक्षा की आवश्यकता के अनुसार पढ़ाते हैं जिसके कारण कभी–कभी कक्षा के निर्धारित समय से ज्यादा पढ़ा देते हैं। उनके विद्यालय के अध्यापक कक्षा में शिक्षण से पहले तैयारी कर के जाते हैं इससे उनके साथ बच्चों को भी विषय में पकड़ बनाने में सहायता मिलती है। कक्षा अध्यापन में यह तैयारी बहुत ही महत्वपूर्ण है जिसके कारण शिक्षण अधिगम एक संयोजित तरीके से हो पाता है।**

विद्यालय में यदि भरपूर संसाधन हो तो उसका असर विद्यार्थियों और शिक्षकों पर भी दिखता है। विद्यालय में बालक और बालिकाओं के लिए उपयुक्त एवं स्वच्छ टॉयलेट हैं। शिक्षण से सम्बंधित संसाधनों की भी विद्यालय में कोई कमी नहीं है। विद्यालय के पास बच्चों को तकनीकी ज्ञान देने के लिए 2 कंप्यूटर और बड़ी एलसीडी है। शिक्षक इन संसाधनों का प्रयोग विद्यार्थियों को नवीनतम जानकारी देने के लिए करते हैं। विद्यार्थी सप्ताह में दो बार कंप्यूटर की कक्षा के लिए इन संसाधनों का प्रयोग करते हैं। अध्यापकों ने बताया कि कंप्यूटर का प्रयोग हम विद्यार्थियों को शैक्षणिक विडियो दिखाने हेतु करते हैं। इन कक्षाओं का उद्देश्य बच्चों को बाहर की दुनिया के लिए तैयार करना है साथ ही उनके तकनीकी ज्ञान को समृद्ध करना भी है।

अब प्रश्न यह है कि एक ही परिसर में दो भवन क्यों? जब हम पहली बार विद्यालय पहुँचे तो यह देखकर थोड़ा आश्चर्य हुआ कि यहाँ दो भवन थे। (एक नया और एक पुराना) और पुराना भी अच्छी हालत में दिख रहा था। बाद में बातचीत के दौरान पता चला कि पुराना भवन जंगल से लगा हुआ है और उस पर दो बार पेड़ गिर चुके हैं। जिससे भवन कुछ क्षतिग्रस्त भी हुआ। हालाँकि दोनों बार ही विद्यालय में बच्चे नहीं थे तो कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ, पर खतरा हमेशा रहता था, विद्यालय की मरम्मत तो हो गयी पर समुदाय के सहयोग और समर्थन से विद्यालय के लिए नए भवन की संस्तुति मिल गयी और संस्तुति मिलने से पहले ही सुनाली ग्राम ने पुराने भवन के पास ही भूमि दान दे दी थी। यहीं से बात चली विद्यालय और समुदाय के बीच संबंधों की।

उपयुक्त संसाधन और अध्यापकों के बेहतर सहयोग के साथ समुदाय का समर्थन विद्यालय को नयी ऊँचाइयों तक ले जाता है। विद्यालय के अध्यापक बताते हैं कि समुदाय के साथ अच्छे

रिश्तों का कारण प्रधानाध्यापक सत्यपाल जी की मेहनत और तत्परता है। सत्यपाल जी का समुदाय के साथ निरंतर संवाद आज स्कूल की एक अच्छी छवि का कारण बन गया है। इस विषय पर प्रधानाध्यापक बताते हैं कि आज समुदाय विशेषकर जन प्रतिनिधि से सम्बन्ध इतने मधुर हो गए हैं कि उन्हें कोई भी प्रशासनिक काम के लिए दौड़ भाग नहीं करनी पड़ती है। बस जन प्रतिनिधि के संज्ञान में लाना होता है। इसका उदाहरण विद्यालय में कंप्यूटर के लिए विद्युत व्यवस्था का होना है। वह बताते हैं कि कैसे उनके एक निवेदन से जन प्रतिनिधि ने लाइन डलवाने के काम की पूरी जिम्मेदारी लेते हुए कंप्यूटर आने से पहले ही पूरा करवा दिया। इसी तरह जब विद्यालय की एक टीम ब्लॉक स्तर पर सांस्कृतिक प्रस्तुति के लिए रंवाई की संस्कृति पर तैयारी करने लगी (जो कि बाद में जिला एवं राज्य स्तर पर अव्वल रही), तो प्रधान ने प्रधान निधि से विद्यालय के लिए ड्रेस उपलब्ध करवाई। आज इस तरह के सम्बन्ध का कारण सत्यपाल जी का समुदाय हर एक महत्वपूर्ण अवसर में सम्मिलित होने को बताते हैं। वह कहते हैं कि सभी शिक्षक समुदाय के हर सुख–दुख के मौके पर सम्मिलित होते हैं और समुदाय के साथ इस तरह का व्यवहार समझ और भरोसा कायम करने में सहायक रहा है।

इस विद्यालय और इसके शिक्षकों के प्रयासों को देखकर लगता है कि अगर शिक्षण के इस कार्य में समुदाय को भी भागीदार बना लिया जाये तो बहुत से कठिन कार्यों को मिलजुलकर आसान बनाया जा सकता है। इस विद्यालय की जिस तरह की साझेदारी दिखाई पड़ती है वह सराहनीय प्रयास है। यह विद्यालय बच्चों और अध्यापकों का तो है ही साथ ही समुदाय का भी है। यह भी देखने में आता है कि जब विद्यालय पर समुदाय की बराबर भागीदारी रहती है तो ऐसे में सभी शिक्षकों का यह उत्तरदायित्व खुद–ब–खुद तय हो जाता है कि शिक्षार्थियों का अधिगम स्तर तय मानकों और अभिभावकों की अपेक्षा के अनुरूप हो। इस साझा प्रेरणा से शिक्षक भी बहुत मेहनत से अपने–अपने विषय बच्चों को पढ़ाते हैं। न केवल विषय का पठन–पाठन करते हैं बल्कि बच्चों के तथा स्कूल के समग्र विकास के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

## चिड़िया

कर लेती हूं खुद का काम
चिड़िया है मेरा नाम।
परिश्रम से नहीं डरूंगी
अपनी मेहनत से घोसला बनाती
बच्चों को दाना खिलाती
कर लेती हूँ खुद का काम
चिड़िया है मेरा नाम।
आसमान में उड़ती हूँ
नहीं है मुझे किसी का डर
मुझे नहीं पकड़ सकता कोई
कर लेती हूं खुद का काम
चिड़िया है मेरा नाम।

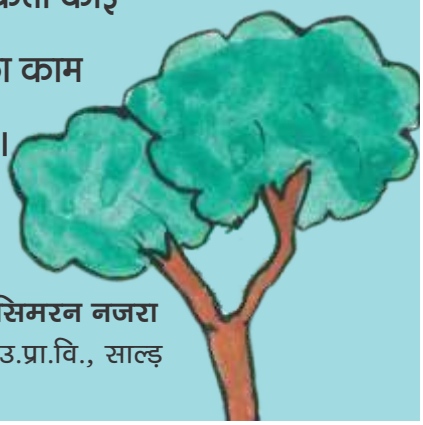

– सिमरन नजरा
कक्षा 7वीं, रा.उ.प्रा.वि., साल्ड़

# बच्चे खुशी से सीख रहे हों तो सब जायज है

## राजकीय प्राथमिक विद्यालय उडरी, डुण्डा

**– मनोरमा व रविज्योति**

**डुण्डा** स्कूल का 'प्राथमिक विद्यालय उडरी' उत्तरकाशी की सुंदर वादियों में स्थित है। सड़क से विद्यालय की दूरी लगभग 4 किलोमीटर है जिसे पैदल ही तय करना पड़ता है। उडरी गाँव में पहुँचकर पता चलता है कि वह बहुत बड़ा गाँव है। वहाँ बहुत से परिवार रहते हैं। लोगों की संख्या ज्यादा होने की वजह से यहाँ 2 आँगनवाड़ी केन्द्र स्थापित किये गये हैं।

विद्यालय पहुँचते ही यहाँ की प्राकृतिक छटा मन को विभोर कर देती है। कुछ साल पहले तक विद्यालय का आधारभूत ढाँचा आज की अपेक्षा बेहतर स्थिति में था, प्राकृतिक आपदाओं के कारण विद्यालय का कुछ हिस्सा पूरी तरह नष्ट हो गया है। वर्तमान समय में विद्यालय में केवल दो कमरे हैं, जिनको व्यवस्थित करके उन्हीं में सभी कक्षाएँ चलायी जाती हैं। विद्यालय में स्थित एक अस्थायी कमरे को भोजनालय के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, जिससे मध्यान् भोजन व्यवस्था में अध्यापकों व छात्रों को काफी संघर्ष करना पड़ता है।

सभी विद्यार्थी विद्यालय में साफ़–सुथरे कपड़े पहनकर व अच्छे से तैयार होकर आते हैं। अपने जूतों को व्यवस्थित क्रम में रखते हैं। यहाँ के सभी छात्र स्वानुशासन में रहते हैं।

विद्यालय में तीन अध्यापक है जिसमें हेड मास्टर प्रशासनिक कार्यों को देखते हैं तथा राजेश जोशी व सेमवाल जी शिक्षण कार्य को संभालते हैं। दोनों अध्यापक अपने शिक्षण कार्य में निपुण हैं तथा उनकी विद्यालय में रोजाना उपस्थिति इस बात का प्रमाण है। शिक्षकगण कक्षा में शिक्षण कार्य के लिए नयी–नयी विधियों का इस्तेमाल करते रहते हैं।

विद्यालय में बच्चों का शैक्षणिक स्तर बहुत ही अच्छा है। कक्षा 1 एवं 2 के सभी बच्चे को वर्णों व ध्वनि की पहचान है। वह कहानी को हाव–भाव के साथ बोलते हैं। कक्षा तीन के बच्चों को संख्याओं की पहचान है साथ ही वे सरल वाक्यों को आसानी से बना लेते हैं। कक्षा 4 एवं 5 के बच्चों का शैक्षणिक स्तर काफी विकसित है वह वाक्यों को लिखना व संख्यात्मक प्रश्नों को आसानी से हल कर पाते हैं। अध्यापक कक्षा–1 व 2 के बच्चों पर अधिक ध्यान देते हैं, जिससे बच्चों का आधार मजबूत रहे।

विद्यालय में बच्चों के स्तर को देखकर, यह विचार मन में तुरंत आता है कि अध्यापक कक्षा में बच्चों के साथ कुछ तो अलग प्रक्रिया से कार्य कर रहे हैं। जिसे देखना हमारे लिए एक सुखद एहसास जैसा था। हमने इसका एक विडियो भी प्रकाशित किया है। कक्षा 1 और 2 के बच्चों का ध्यान केन्द्रित करते हुए भाषा के बुनियादी ज्ञान को विकसित करने में अध्यापकों का बहुत अच्छा प्रयास देखने को मिला। साथ ही कक्षा 4 व 5 के बच्चे एक साथ बैठते हैं जिन्हें अपने–अपने स्तर के अनुसार वर्ग समूह में बाँटा गया है। बच्चों में अदभुत तरीके का आत्मविश्वास नजर आता है। बच्चों को उनके प्रदर्शन के आधार पर सम्मानित किया जाता है। इस कारण से बच्चे काफी उत्साहित रहते हैं और बेहतर प्रदर्शन करने का प्रयास करते हैं।

बच्चों के द्वारा अच्छा काम किए जाने पर अध्यापकों द्वारा उन्हें स्टार दिया जाता है। जिससे बच्चे कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं। शैक्षिक सत्र के अन्त में बच्चों के स्टार को गिना जाता है। जिनका स्टार सबसे ज्यादा होता है उन्हें पुरस्कार दिया जाता है। पुरस्कार राशि शिक्षक स्वयं एकत्र करते हैं। पिछले

सत्र में प्रथम आने वाले बच्चों को विद्यालय की तरफ से पढ़ने के लिए कुर्सी व मेज दी गई थी। इनमें पाठ्यक्रम के अलावा विद्यालय की अन्य गतिविधियों व खेलकूद को भी शामिल किया जाता है।

विद्यालय तथा समुदाय के बीच सम्बन्ध बहुत ही अच्छे हैं। सभी गाँव वाले अध्यापक का बहुत सम्मान करते हैं। विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों के अभिभावकों के साथ तो अध्यापकों के सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ एवं आत्मीय स्तर का है। जोशी जी आवश्यक दवाइयों को विद्यालय में रखते हैं जिससे बच्चों के साथ ग्रामीण भी लाभन्वित होते हैं।

विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने में गाँव के सदस्य एवं अभिभावक काफी सहयोग करते हैं तथा समय–समय पर विद्यालय आते रहते हैं। इससे विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति निरंतर बनी रहती है।

विद्यालय में उपस्थिति बढ़ाने और इसे सुसंयत तरीके से आगे बढ़ाने में श्री राजेश जोशी जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके लिए पहली पीढ़ी के बच्चों को स्कूल लाना और उन्हें स्कूल से जोड़े रखना आसान नहीं था। कई बार निराशा उन्हें घेरती लेकिन जल्दी ही बच्चों की मुस्कुराहटें उन्हें निराशा से बाहर खींच लेती। राजेश को बच्चों का नहीं, समुदाय का भी भरपूर प्यार, सहयोग मिला। गुरुजी पर सबको बेहद स्नेह है। कोई प्यार से उनके लिए मट्ठा लेकर आता कोई खास तरह की चटनी बनाकर लाता। शिक्षक बच्चों के साथ ही बैठकर खाना खाते हैं। वो बच्चों के सबसे अच्छे दोस्त हैं। एक दिन भी वो विद्यालय न आएं तो बच्चे परेशान हो जाते हैं और शिक्षक का भी अपने बच्चों के बिना मन नहीं लगता है।

राजेश की पत्नी मंजू बताती है – ''वह कहीं बाहर काम से जाते हैं तो भी कभी कोई खिलौना, कोई मिठाई स्कूल के बच्चों के लिए जरूर खरीदते हैं। कई बार मैं उनसे कहती हूँ कि तुम तो अपने बच्चों से भी ज्यादा स्कूल के बच्चों को प्यार करते हो, तो वह हंसकर जवाब देते हैं कि मेरे दो बच्चों श्रेयस और वेदांत के पास तो तुम हो ख्याल रखने को, लेकिन उन बच्चों के पास तो मैं ही हूँ। वे तो कभी उड़ने वाले जहाज, स्पाइडरमैन या रोबोट जैसे खिलौने नहीं देख पायेंगे।''

**राजेश कहते हैं कि शिक्षक बच्चों को सिर्फ सिखाने के लिए नहीं होता बल्कि सीखने के लिए भी होता है। बच्चों के खजाने में बहुत सारी जानकारियां होती हैं। वो हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। राजेश ने बच्चों को चिट्ठी और डायरी लिखना सिखाया है। वो कहते हैं चिट्ठी और डायरी लिखने के चलते मैंने समझा कि बच्चों की वो हिचक टूटती है। वो बेहिचक होकर गलतियां करते हैं। गलती को माफ करना तो अलग बात है मैं अपने बच्चों को गलती करने की भी आजादी देता हूं।**

उनके के पास हमेशा कुछ टॉफियां, कुछ स्टिकर, कुछ खिलौने होते हैं। वो बच्चों की कॉपियों में सुंदर स्टिकर लगाकर उन्हें शाबासी देते हैं। टॉफियॉ उनके टॉस्क का ईनाम होती हैं। साथ ही वो इस बात का भी ख्याल रखते हैं कि यह सब बच्चों का उत्साह तो बढ़े लेकिन उनमें प्रतिस्पर्धा न पनपे। उन्होंने इस बात की शिकायत नहीं की कि बच्चे घर से पढ़कर नहीं आते। वो जानते हैं कि जिन हालात से बच्चे निकलकर आ रहे हैं, उनमें उनका स्कूल तक आना ही बहुत है। वो बच्चों को अपने घर के हालात बदलने के लिए तैयार करते हैं। वो कहते हैं कि 'मैं बच्चों को इतना सक्षम बनाना चाहता हूं कि वे अपने घर का माहौल खुद

बदल सकें। शिक्षकों ने स्कूल में तीन हाउस बना रखे हैं। हरा, केसरिया और सफेद। हर हाउस के बच्चे अपने हाउस के रंग के रिबन लगाते हैं। लड़कियाँ बालों में लगाती हैं तो लड़के हाथ में बाँधते हैं। जब सारे हाउस इकट्ठे होते हैं तो बहुत सुंदर नजारा होता है। एक हाउस दूसरे हाउस के बारे में जानकारी इकट्ठा करता है। बच्चे ही दूसरे बच्चों का काम देखते हैं। एक बच्चा अग्रणी भूमिका में आता है यह देखने को सारे हाउस ठीक से काम कर रहे हैं या नहीं। जिम्मेदारियों का ठीक से बँटवारा और उन्हें पूरा करने की होड़ बच्चों को अपने कामों के प्रति उत्तरदायित्व से भरती है। कूदने वाली रस्सी, बैडमिंटन, फुटबॉल, शतरंज, लूडो जैसे खिलौने राजेश ने स्कूल में जमा किये हैं। स्पोर्ट्स क्लब बना रखा है। बच्चे खुद इसकी जिम्मेदारी लेते हैं।

उन्होंने स्कूल में बच्चों की बाल सरकार भी बनायी है। इस सरकार में प्रधानमंत्री से लेकर, स्वास्थ्य मंत्री, सांस्कृतिक मंत्री, व्यवस्था मंत्री, तक सब होते हैं। प्रधानमंत्री स्कूल की सारी गतिविधियों पर नजर रखता है। स्वास्थ्य मंत्री बच्चों के नाखून कटे हैं कि नहीं, ड्रेस साफ है या नहीं, बाल ठीक से बने हैं कि नहीं, बच्चे नहा के आये कि नहीं इन बातों का ध्यान रखता है। सांस्कृतिक मंत्री प्रार्थना सभा का ध्यान रखता है। इसके अलावा भोजन मंत्र, गीत वगैरह करवाना भी उसका काम है। व्यवस्था मंत्री बच्चों के छूटे हुए सामान, खोए हुए सामान को देखता है। स्कूल में एक रैपिड एक्शन फोर्स भी है जो दरी बिछाना, दरी उठाना, फटे हुए कागज को, फैले हुए सामान को व्यवस्थित करता है। किसी भी बच्चे को कोई दिक्कत होती है तो रैपिड एक्शन फोर्स उसकी मदद करता है। धीरे–धीरे स्कूल के हर काम की जिम्मेदारी बच्चों ने ले ली है। राजेश बच्चों के दोस्त बन चुके हैं। वो दूर से सारे कामों को होते हुए देखते हैं और मुस्कुराते हैं। राजेश कहते हैं कि शिक्षक बच्चों को सिर्फ सिखाने के लिए नहीं होता बल्कि सीखने के लिए भी होता है। बच्चों के खजाने में बहुत सारी जानकारियां होती हैं। वो हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। राजेश ने बच्चों को चिट्ठी और डायरी लिखना सिखाया है। वो कहते हैं चिट्ठी और डायरी लिखने के चलते मैंने समझा कि बच्चों की वो हिचक टूटती है। वो बेहिचक होकर गलतियां करते हैं। गलती को माफ करना तो अलग बात है मैं अपने बच्चों को गलती करने की भी आजादी देता हूं।

बल्कि उन्हें उत्साहित करता हूँ कि गलती करो इससे उनके मन से गलत हो जाने का, गलत बोल जाने का भय जाता रहता है। उसी के बाद सही की शुरुआत होती है। 'बच्चों के साथ इस प्यार भरे सफर की शुरुआत राजेश के लिए बहुत आसान नहीं था। बहुत आलोचनाएँ सुननी पड़ती थीं। 'ये दुनिया बदलने आए हैं। ''अब तो सब बदलकर ही मानेंगे जैसे ताने सुनने पड़ते थे।' घर पर भी सवाल होते थे कि सारी दुनिया को बदलने का ठेका क्या तुमने ही ले रखा है? और मैं यही जवाब देता हूँ कि मैंने कब कहा कि मैं दुनिया बदलने आया हूँ। यह दुनिया तो पहले से ही खूबसूरत है। मैं तो खुद इस दुनिया से अपने लिए कुछ खुशियों के पल, कुछ सुकून लेने आया हूँ। इसी अच्छा लगने को जीने के लिए राजेश उठकर चल देते हैं। थोड़ी ही देर में उनके क्लास से बच्चों की सामूहिक आवाज राजेश गुरूजी की कविताओं में डूबने–उतराने लगती है। वो कविताएँ जिन्हें राजेश ने कक्षा में बच्चों के साथ मिलकर लिखा है...

**चाचा चाचा रामभरोसे, मुझे खिलाओ गरम समोसे**
**ठंडी चाय नहीं पियूँगा, न खाऊँगा इडली डोसे...**

# खुशियों की पाठशाला

## राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय डामटा, नौगाँव, उत्तरकाशी

– संजीव बिजल्वाण

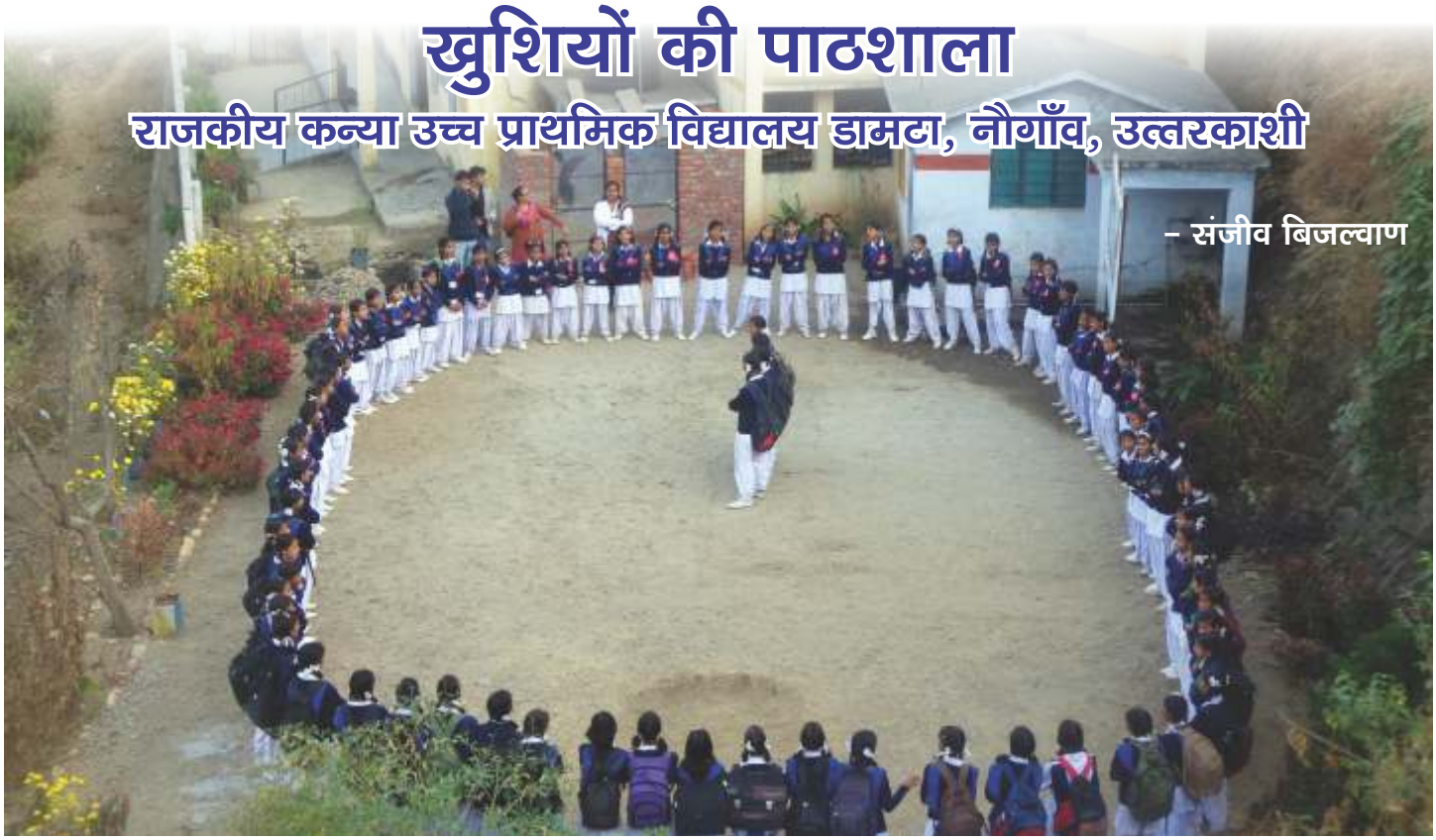

**जिस** तरह से समाज के कई आयाम होते हैं उसी तरह शिक्षा और विद्यालय के भी कई आयाम होते हैं। भौतिक संसाधनों से लेकर सामुदायिक सहभागिता और शिक्षण प्रक्रियाओं से लेकर छात्र–छात्राओं की दक्षता प्राप्ति तक। इन सब में महत्वपूर्ण बात बच्चों के आत्मविश्वास में वृद्धि करना है। सामान्यतः आज के समय में हम अच्छा विद्यालय उसी को मानते हैं जहां जाकर बच्चे पढ़ना–लिखना अच्छी तरह से सीख लेते हैं।

आज हम सभी सरकारी विद्यालयों की गिरती गुणवत्ता से चिंतित हैं। उन विद्यालयों की ऐसी छवि बन गयी है या कहें कि बना दी गयी है कि सभी सरकारी विद्यालयों में बच्चों को बेहतर शिक्षा नहीं मिल पा रही है। लेकिन स्थिति वैसी खराब नहीं है जैसी बतायी जाती है बहुत सारे विद्यालय ऐसे हैं जो धरातल पर वास्तव में अच्छी शिक्षा देने का काम कर रहे हैं। इसी तरह का एक विद्यालय है राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय डामटा। उत्तरकाशी जनपद के नौगाँव विकासखण्ड में अवस्थित एक छोटा सा कस्बा है डामटा जहाँ यह विद्यालय संचालित हो रहा है। यमुनोत्री दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग और यमुना नदी के किनारे बसा यह कस्बा उत्तरकाशी जनपद के दक्षिण–पश्चिमी छोर पर जनपद टिहरी गढ़वाल के जौनपुर क्षेत्र से सटा हुआ है। यमुना नदी के पार जौनसार है जो देहरादून जनपद का हिस्सा है। इस प्रकार डामटा तीन जनपदों को जोड़ने वाला एक ऐसा केन्द्र है जो अपने में कई प्रकार की सांस्कृतिक विविधता को समेटे हुए है। इसकी झलक यहाँ के इस विद्यालय में भी स्वतः दिख जाती है।

इस विद्यालय की स्थापना सन् 2011 में हुई थी। एक वर्ष में ही इसका भवन तैयार हो गया था, यद्यपि बाद में आपदा के कारण भवन और प्रांगण आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त भी हुए। पहले सत्र में यहाँ 32 बालिकाएँ पढ़ती थीं जो बीते सत्र में पास होकर डामटा के ही राजकीय इण्टर कॉलेज में पढ़ रही हैं। आज के दिन यहां 89 बालिकाएँ अध्ययनरत हैं, जिनके शिक्षण के लिए 3 शिक्षिकाएँ नियुक्त हैं। दो भोजन माताएँ हैं। एक सहायिका हैं जो शिक्षण के अतिरिक्त विद्यालय की तमाम व्यवस्थाओं में मदद करती हैं। उनके श्रम व सहयोग हेतु शिक्षिकाएँ अपनी तनख्वाह में से अंशदान देती हैं। भवन में तीन कक्षा–कक्ष, एक बरामदा, दो छोटे कमरों में से एक में कार्यालय तथा दूसरे में एमडीएम, खेल, संगीत आदि से संबंधित सामान रखा जाता है। एक

शौचालय, एक स्नानघर उपयोग में हैं तथा दो शौचालय निर्माणाधीन हैं। एक कच्चा मैदान है। भवन की सुरक्षा हेतु चारदीवार बनी है लेकिन मैदान के चारों ओर इस तरह की सुरक्षा दीवार व बाड़ नहीं है। एक किचन कम स्टोर है। अन्य सुविधाओं में बिजली और पानी के साथ–साथ पंखे भी लगे हैं। बच्चों को बैठने के लिए दरियाँ उपलब्ध हैं।

बच्चों की यदि बात करें तो यहाँ पढ़ने वाली बालिकाएँ लगभग 15 गाँवों से आती हैं, जो अधिकांशतः जौनसार तथा गोडर क्षेत्र से जुड़े हैं। सभी बालिकाएँ डामटा में ही रहती हैं, कोई अपने माता–पिता के साथ तो कोई अपने भाई–बहन के साथ, ज्यादातर किराए के मकानों में रहती हैं, कुछ बालिकाएँ ऐसी भी जो अपने भाई या बहन के लिए भोजन तैयार करने, कपड़े धोने व संरक्षण का काम भी करती हैं।

केवल 3 वर्ष में ही इस विद्यालय ने स्वयं को न केवल स्थापित किया है बल्कि एक बेहतर विद्यालय की साख भी बनायी है। सीखने–सिखाने के लिए आवश्यक मैत्रीपूर्ण वातावरण और पर्याप्त अवसरों की उपलब्धता जैसे महत्वपूर्ण पक्षों को इस विद्यालय ने बखूबी आत्मसात् किया है। यह सब संभव हुआ है यहाँ की कर्मठ, प्रतिबद्ध व संवेदनशील शिक्षिकाओं के दम पर। केवल 3 शिक्षिकाएँ होते हुए भी इन्होंने कभी स्टाफ की कमी का रोना नहीं रोया। चाहे विभागीय अधिकारी हों या समुदाय, वह सभी को शिकायती नहीं बल्कि सहयोगी नजरिए से देखती हैं। इसलिए इस विद्यालय को हर तरह का सहयोग मिलता आ रहा है। प्रधानाध्यापिका की भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रही श्रीमती दुर्गेश यादव का मानना है कि हमें समुदाय एवं अभिभावकों का पूरा सहयोग मिलता है। वह विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठकों में भागीदारी से लेकर श्रमदान करने और खेलकूद व सांस्कृतिक गतिविधियों, रैलियों में प्रतिभाग करने हेतु आर्थिक सहयोग करने तक, कहीं भी पीछे नहीं रहते हैं। इस विद्यालय के बेहतर होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है कि डामटा में अन्य विद्यालयों के होते हुए भी लोग अपने बच्चों को यहाँ पढ़ा रहे हैं।

विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी सहित बीआरसी तथा सीआरसी समन्वयक ने भी विद्यालय को स्थापित करने में पूरा सहयोग व मार्गदर्शन दिया है।

इस विद्यालय की दैनिक गतिविधियों की औपचारिक शुरुआत होती है प्रार्थना सभा से। इसमें समूहगान, प्रार्थना, राष्ट्रगान, प्रतिज्ञा, कहानी, समाचार, सामान्य ज्ञान आदि के साथ–साथ पीटी के माध्यम से शारीरिक अभ्यास भी किए जाते हैं। साथ ही बच्चों की स्वच्छता व सफाई को देखा जाता है। इन सभी गतिविधियों को मुखिया के रूप में चुनी गयी बालिकाएं ही संचालित करती हैं। कक्षाओं में प्रवेश करते ही शुरू होता है योगाभ्यास। तीनों कक्षाओं के मुखिया बच्चे जिन्हें कैप्टन कहा जाता है, योगा व प्राणायाम में अन्य बच्चों की मदद करते हैं। किसी कक्षा में सूर्य नमस्कार तो किसी में ताड़ासन, वृक्षासन होने लगता है और फिर गूंजने लगती है ओम की सुमधुर ध्वनि। यस मैम की जगह सामान्य ज्ञान या विषयों से जुड़ी बात बोलकर हर एक बालिका द्वारा अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी जाती है। फिर शुरू होती है विषयगत कक्षाएं, यानी हिन्दी, गणित, विज्ञान आदि की पढ़ाई। हर एक विषय व कक्षाओं में समूह में कार्य करने को प्राथमिकता दी जाती है। हर एक बालिका को सीखने, प्रश्न करने व प्रस्तुति करने का मौका तो मिलता ही है, आपस में सीखने–सिखाने का वातावरण भी बनता है। दीवारों पर लगे सैकड़ों रंग–बिरंगे चार्ट इस बात की गवाही देते हैं कि कक्षा–शिक्षण में 'क्रिएटिविटी' और 'पियर लर्निंग' को खास तवज्जो दी जाती है। प्रोजेक्ट वर्क भी खूब करवाया जाता है। मध्यान्तर में सभी बच्चे बरामदे में बैठकर मध्याह्न भोजन का आनंद लेते हैं। भोजन परोसने में संबंधित

**दैनिक व साप्ताहिक गतिविधियों के लिए यद्यपि समय–सारिणी बनायी गयी है लेकिन उसके अनुपालन में बहुत लचीलापन रखा गया है। शनिवार को नियमित पठन–पाठन की जगह सृजनात्मक व सह–शैक्षिक गतिविधियाँ करवायी जाती हैं। यहाँ की शिक्षिकाएँ मानती हैं कि खेल, गीत–संगीत, नृत्य जैसी सह–शैक्षिक गतिविधियों से बच्चों में सीखने के प्रति रूचि और विश्वास जागता है।**

बाल समिति की बालिकाएँ भोजन माताओं की मदद करती हैं। फिर बच्चे कुछ कैरम खेलने लगते हैं तो कुछ राज, लूडो, आदि, कुछ आपस में बातचीत व उछल–कूद में मस्त हो जाते हैं। पुनः शिक्षण प्रक्रिया शुरू होती हैं और छुट्टी के समय समूह गान गाया जाता है। दैनिक व साप्ताहिक गतिविधियों के लिए यद्यपि समय–सारिणी बनायी गयी है लेकिन उसके अनुपालन में बहुत लचीलापन रखा गया है। शनिवार को नियमित पठन–पाठन की जगह सृजनात्मक व सह–शैक्षिक गतिविधियाँ करवायी जाती हैं।

यहाँ की शिक्षिकाएँ मानती हैं कि खेल, गीत–संगीत, नृत्य जैसी सह–शैक्षिक गतिविधियों से बच्चों में सीखने के प्रति रुचि और विश्वास जागता है। इसीलिए हमारी बालिकाएँ न केवल मुखर या सहज हैं बल्कि विषयगत पक्षों में भी उतनी ही मजबूत हैं।

हर बालिका का पहचान पत्र बनाया गया है जिसमें फोटो और विद्यालय का लोगो भी छपा है। इसी तरह से हर एक की अपनी बॉक्स फाइल है जिसमें बालिका का, उसके परिवार का परिचय व फोटो दर्शायी गयी है। लगभग हर सप्ताह बच्चे स्वयं के अनुभवों, विचारों, भावनाओं को कहानी, कविता, गीत, प्रश्न, चित्र आदि के माध्यम से लिखित रूप में बॉक्स फाइल में संकलित करते हैं। परिसर में खिलते रंग–बिरंगे फूल इस ओर इशारा करते हैं कि बच्चों का अपने विद्यालय से गहरा लगाव है। बालिकाओं को किशोरावस्था में होने वाले संवेगात्मक व शारीरिक बदलावों व प्रभावों के संबंध में भी शिक्षिकाओं द्वारा परामर्श दिये जाते हैं। संकुल स्तर से राज्य स्तर की खेलकूद व सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अनेक मैडल व ट्रॉफी इस विद्यालय की बालिकाओं ने अपने नाम की है। नाटक और स्थानीय गीत व नृत्य में तो इनका कोई सानी नहीं है। यहाँ से दो बालिकाओं का चयन आश्रम पद्धति एकलव्य विद्यालय में तथा 1 बालिका का चयन शिवानन्द नौटियाल छात्रवृत्ति हेतु हुआ है।

स्कूल प्रबंधन समिति की अध्यक्ष सीमा देवी के शब्दों में, ''लोगों की सोच ऐसी बन गयी है, सरकारी स्कूल तो और भी अच्छे होते हैं, इस स्कूल से जो लड़कियाँ पढ़कर गयी हैं वह इण्टर कालेज में सबसे तेज हैं, उनकी तारीफ भी होती है।''

अभिभावक श्यामसिंह जी कहते हैं, ''जिस तरह का यहाँ अभी स्टाफ है, इनकी देखरेख में बच्चे और अच्छा करेंगे।'' अभिभावक प्यारो देवी के शब्दों में, ''हम अनपढ़ हैं, जानते नहीं हैं तो क्या हुआ? बच्चों की मदद तो करनी ही पड़ती है। यहाँ मैडम लोग बहुत अच्छी हैं, बहुत मेहनत करती हैं।''

प्रधानाध्यापिका दुर्गेश नंदनी यादव कहती हैं कि इस विद्यालय की ठोस शुरुआत के लिए हमें बहुत मेहनत करनी पड़ी। बच्चों के नामांकन के लिए लोगों के घर–घर जाकर सम्पर्क किया गया। समुदाय के बीच विश्वास पैदा किया। धीरे–धीरे हमें हर तरह का जरूरी सहयोग मिलने लगा। इण्टर कालेज से हमें 30 बालिकाओं का पहला बैच मिला, वहाँ के प्रधानाचार्य जी ने भी सहयोग दिया। तत्कालीन जिला पंचायत अध्यक्ष और अन्य स्थानीय लोगों का भी सराहनीय सहयोग रहा। हमारे विभागीय अधिकारी जैसे बीईओ या बीआरसी, सीआरसी समन्वयक हमेशा मार्गदर्शन करते हैं। पहले 1 वर्ष तक अकेले ही विद्यालय संभाला। हम अपना काम करते हैं, हमारी कोशिश होती है कि इन बालिकाओं में 'थिंकिंग पावर' विकसित हो। हम देखते हैं कि जिन बच्चों में जिस तरह की संभावानाएं या रुचि है उनको उस तरह के मौके दिए जाते हैं। अभी कुछ बच्चे ऐसे हैं जो आगे नहीं आ पा रहे हैं, उनको कैसे आगे लाया जाए। लड़कियों को हमारा समाज एक इन्सान की तरह देखने लगे। स्कूल प्रबंधन समिति से हमें बहुत ताकत मिलती है। हम विद्यालय को पूरा समय देते हैं। हम एक टीम के रूप में कार्य करते हैं। एक शिक्षक के लिए जरूरी है ''सेल्फ मोटिवेशन'', बिना इसके हम गुणवत्ता नहीं ला सकते हैं। हमारी कोशिश मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाए रखने की होती है।

यहाँ की दूसरी शिक्षिका श्रीमती माया नेगी कहती हैं, ''हमारे बच्चे निडर हैं, अभिभावक बहुत सहयोगी हैं। अपने बच्चों को सफाई से स्कूल भेजते हैं, बैठकों में हमेशा आते हैं, बच्चों को कॉपी, पेन्सिल आदि सामग्री भी तुरन्त उपलब्ध कराते हैं। मैडम लोग भी बहुत मदद करती हैं। मैं चाहती हूं कि इन बालिकाओं के लिए अच्छा से अच्छे करके जाएं। शिक्षक पर्याप्त हों तो हर एक बच्चे पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जा सकता है। सरकारी स्कूलों या शिक्षकों के बारे में कई बातें सुनने को मिलती हैं, हम अपना पूरा समय विद्यालय को, इन बच्चों को देते हैं।'' तीसरी शिक्षिका सविता चमोली के अनुसार, ''इस स्कूल को जमाने के लिए मुझे पूर्व के स्कूल से जुड़े अनुभवों से बहुत मदद मिली। डामटा के प्राथमिक स्कूल में 14 साल तक जो मेहनत की उससे यहाँ के समुदाय ने हम पर भरोसा किया और आज हमारे पास इतनी अच्छी संख्या में बच्चे हैं। यहाँ के सभी लोग मुझे अच्छे से जानते हैं। हमारी बालिकाएँ हमसे अपने मन की सारी बातें बताती हैं, बातचीत से ही डर दूर होता है। वह हर चीज़ में आगे रहती हैं, उनको आए या ना आए, हर काम के लिए आगे रहती हैं, स्वतंत्र रहती हैं। हम छुट्टी के दिन या अलग से भी समय देकर बच्चों के साथ काम करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सबसे पहले एक अच्छे इन्सान बनें। हमारे बच्चों को देखकर लोग प्रेरणा ले सकते हैं।''

भोजन माताओं के अनुसार, ''यहाँ के लोग ऐसा मानते हैं कि इस स्कूल की टीचर बहुत मेहनती हैं, इस विद्यालय के खुलने से बालिकाओं में बहुत बदलाव आया है।''

बालिकाओं ने कहा, ''हमारे स्कूल में सभी आपस में मिलकर रहते हैं, एक–दूसरे का सम्मान करते हैं। हम किसी तरह का भेदभाव नहीं करते, नियमों का पालन करते हैं। हम जहाँ भी रैलियों व कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, वहाँ से नई–नई बातें सीखकर आते हैं। हम अपनी सोच बदलें तो जेण्डर वाला भेद–भाव दूर होगा। हम बहुत सारी गतिविधियाँ सदनवार या समूहों में करते हैं। जिम्मेदार साथियों को सदन का लीडर चुना जाता है, लीडर काम न करे तो उसे हटा दिया जाता है। चुनाव वोटिंग प्रक्रिया से किया जाता है।''

इस प्रकार डामटा का यह विद्यालय एक उदाहरण है इस बात का कि सरकारी शिक्षा व्यवस्था लोकतंत्र में सर्वोपरि है और हमेशा रहेगी, बस जरूरत है भरोसा करने की और भरोसे योग्य कुछ करके दिखाने की। किसी विद्यालय के अच्छा होने के क्या मायने होते हैं? इसको मापने के हमारे पास क्या मानक होते हैं? क्या किसी विद्यालय को एक पैमाने पर आँका जा सकता है? शायद नहीं। सभी आयाम या कहें कि घटक मिलकर काम करते हैं तो उसमें गुणवत्ता तो आती ही है। संसाधनों की उपलब्धता होते हुए भी उनका सही इस्तेमाल तभी संभव है जब उससे जुड़े लोगों को कोई साझा मकसद हो, साझी समझ हो।

यहां की बालिकाएं कहती हैं, ''यह हमारा घर जैसा है। हममें बहुत एकता, प्यार और सम्मान है। तभी तो सब एक सुर में कहते हैं, ''हमारे स्कूल की सबसे बड़ी बात यह है कि हमारी मैडम लोग बहुत अच्छी हैं।''

यह पूछने पर कि सफेद रंग के इन एक जैसे जूतों में से अपना–अपना जूता कैसे पहचान लेते हो, तो जवाब मिला, ''जूता पैर पहचान लेता है।''

इस विद्यालय की कक्षा 6 की छात्रा कुमारी दीपिका कहती हैं ''मेरे दादाजी ने बताया कि यहाँ बहुत अच्छी पढ़ाई होती है, तो मैंने यहीं एडमिशन लिया।''

*आप जानते ही हैं कि प्रवाह में शिक्षक साथियों के अनुभव एवं उनकी रचनाएं भी प्रकाशित की जाती है। शिक्षक साथी अपने लेख अथवा बच्चों की रचनाओं को प्रकाशन हेतु भेजना चाहें तो निम्न पते पर प्रेषित करें।*

*अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन*
*उत्तराखण्ड स्टेट इंस्टीट्यूट*
*53, ई.सी. रोड, देहरादून–248001 उत्तराखण्ड*

# संवेदनशील, कर्तव्यनिष्ठा का कोमल संयोजन

## राजकीय प्राथमिक विद्यालय गढ़वालगाड, चिन्यालीसौड़

**– संजीव शर्मा, नरेश व मंजू**

**राजकीय** प्राथमिक विद्यालय गढ़वालगाड की स्थापना सन 1962 में हुई थी। यह विद्यालय ग्राम पंचायत गढ़वालगाड संकुल खालसी, विकासखण्ड चिन्यालीसौड़, तहसील, चिन्यालीसौड़ जनपद उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में स्थित है। इसके पूरब दिशा में ग्राम पंचायत गोदड़ी जनपद टिहरी गढ़वाल स्थित है। इसी दिशा में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गढ़वालगाड थौलधार नामक बस्ती में स्थित है। पश्चिम दिशा में ग्राम पंचायत खालसी जो कि हमारी न्याय पंचायत भी है। उत्तर दिशा में ग्राम पंचायत जोगथ तल्ला स्थित है। दक्षिण दिशा में ग्राम पंचायत छोटी मणी स्थित है। सड़क मार्ग से विद्यालय की दूरी 5 किलोमीटर है भौगोलिक दशा की दृष्टि से विद्यालय के आस–पास खेत, पेड़–पौधे व वन स्थित है। विद्यालय परिसर के अन्दर दो पेड़ अखरोट के तथा एक पेड़ शहतूत का भी है।

विद्यालय में बच्चों के लिए खेल का मैदान, एक भूकम्प के समय की केदार कुटी भी बनी है। विद्यालय रमणीक जगह पर स्थित है। जहाँ से टिहरी झील, कण्डी सौड़, सुरकन्डा देवी आदि रमणीक स्थान दिखाई देते है। जिसका आनन्द विद्यालय के प्रांगण से लिया जा सकता है। इस विद्यालय में कक्षा–1 से 5 तक कुल 63 बच्चे नामांकित है जिनमें 39 बालिकाएं और 24 बालक है। बच्चों के अलावा तीन शिक्षक है। संजय कुक्साल, कोमल सिंह, सुमित्रा पंवार। विद्यालय का आधारभूत भौतिक ढाँचा जैसे कक्षा–कक्ष खेल की जगह शौचालय, विद्यालय का सौन्दर्यीकरण सभी चीजें अच्छी है।

विद्यालय की शुरुआत प्रतिदिन प्रार्थना सभा के आयोजन से होता है। प्रार्थना के बाद गायत्री मंत्र व सरस्वती मंत्र का उच्चारण किया जाता है। तत्पश्चात प्रार्थना प्रतिदिन बदल–बदल कर की जाती है। इसके पश्चात प्रतिज्ञा, समूहगान राष्ट्रगान किया जाता है। इसके बाद प्रेरक प्रसंग,

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तर बच्चों द्वारा व अध्यापकों द्वारा प्रतिदिन नई–नई जानकरियों के साथ दी जाती है।

नवीन समाचारों से भी बच्चों को प्रतिदिन अवगत कराया जाता है। छात्र/छात्राओं की शारीरिक स्वच्छता, व्यायाम आदि प्रतिदिन कराया जाता है। तत्पश्चात सभी छात्र/छात्राओं की उपस्थिति प्रार्थना सभा में ही ली जाती है। इसके पश्चात सभी छात्र/छात्रा को पंक्तिबद्ध ढंग से कक्षा–कक्ष में अध्ययन हेतु प्रवेश करते हैं।

छात्र/छात्राओं का कक्षा–कक्ष में प्रवेश के ठीक बाद अध्यापकों द्वारा अपने विषय की समय सारणी के अनुसार अपना शिक्षण कार्य आरम्भ किया जाता है। कक्षा 1 में श्रीमती सुमित्रा पंवार जीके द्वारा टी.एल.एम. तथा खिलौनों के माध्यम से शिक्षण करती है। इस विद्यालय में प्रतिदिन का शिक्षण कार्य तीनों शिक्षकों के बेहतरीन समन्वय से संचालित होता है। प्रधानाध्यापक श्री कुक्शाल जी दोनों साथी शिक्षकों को बहुत प्रेरित करते है। कभी भी पदानुक्रम का भाव नहीं पनपने देते। उनकी नजर में पूरे विद्यालय का प्रबंधन रहता है। जो उनके कुशल नेतृत्व प्रबंधन और अकादमिक दृष्टि का परिचय है।

तीनों शिक्षकों के मेहनत और लगन का परिणाम है कि इस विद्यालय में सभी बच्चों को कक्षाओं के स्तरानुसार सीखने का स्तर सामान्य से काफी बेहतर है।

बच्चे अपनी कक्षा की पाठ्यपुस्तकों को समझ कर पढ़ लेते हैं। इसके अलावा बच्चे अपने संदर्भ और स्तर की ऐसी पाठ्य सामग्री भी पढ़ पाते हैं जो अभी कोर्स में नहीं है। बच्चों ने कबाड़ से जुगाड़ करके हस्तशिल्प और खिलौने बनाये है। इसमें बैट्री चालित कार भी शामिल है। शिक्षकों का मानना है कि इस तरह के हस्तकौशल बनाने में शैक्षिक मूल्य निहित है। बच्चे कल्पना कर पाते हैं संसाधनों की व्यवस्था करते हैं और हस्तकौशल द्वारा कोई कृति तैयार करते हैं।

इस काम से सीखने के आनन्द और शिक्षा के कई उद्देश्य सधते हैं। जहां तक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की बात है। तो इस पर शिक्षकों का मानना है कि हम कोई बहुत नवाचारी काम नही कर रहे है विगत दो तीन दशक में जिस तरह बच्चों और उनके सीखने को लेकर सेवापूर्ण व सेवारत प्रशिक्षणों व कई अन्य तरीके के विचारों, पाठ्य पुस्तकों से जो समझ में आता है उन सभी कक्षागत प्रक्रियाओं को पूरी निष्ठा और लगन के साथ नियमित रूप से बच्चों के साथ मिलकर करते हैं शायद इसी का परिणाम है कि हमारे विद्यालय के बच्चे कुछ सीख रहे हैं। उन्हें सीखने में कोई अरूचि या भय नही है।

**विगत दो तीन दशक में जिस तरह बच्चों और उनके सीखने को लेकर सेवापूर्ण व सेवारत प्रशिक्षणों व कई अन्य तरीके के विचारों, पाठ्य पुस्तकों से जो समझ में आता है उसे सभी कक्षागत प्रक्रियाओं को पूरी निष्ठा और लगन के साथ नियमित रूप से बच्चों के साथ मिलकर करते हैं शायद इसी का परिणाम है कि हमारे विद्यालय के बच्चे कुछ सीख रहे हैं। उन्हें सीखने में कोई अरुचि या भय नही है।**

इस विद्यालय को लेकर गांव के सभी अभिभावक काफी खुश रहते हैं। उनका कहना है कि शिक्षक गांव में ही रहते हैं समय से विद्यालय संचालित करते हैं। बच्चे बेहतर सीख रहे हैं। यह पूरा विद्यालय परिवार की तरह चलता है सब एक–दूसरे की मदद करते हैं।

आज जब गांव से ज्यादातर लोग शहरों या कस्बों में अपने आशियाने बसा रहे हैं तो ऐसे दौर में यह जज्बा कि गांव समुदाय के बीच रहना सबके दुःख सुख में शामिल हों और बच्चों को पढ़ने में मदद करें, यह काबिल–ए–सलाम है। वे कभी भी स्वयं स्कूल से अनुपस्थित नहीं होते। यहाँ रहने से उनका समाज के साथ बहुत अच्छा तालमेल है। उन्होंने कहा कि भाग दौड़ की जिन्दगी की वजह से सुगम क्षेत्रों में समाज से सहयोग नहीं हो पाता क्योंकि हम वहां रहते ही नहीं है और शायद सबके लिए ये संभव भी नहीं। मुझे लगा कि अध्यापक को त्याग तो करना ही पड़ेगा, या तो अपने परिवार से दूर रहे, या स्कूल के बच्चों और समाज से (दोनों ही किसी न किसी सन्दर्भ में बहुत जरूरी है)।

एक दिन पहले सुबह कुक्साल जी कूकर में चने की दाल भिगोने के लिए रख रहे थे। पूछने पर उन्होंने कहा कि इससे भोजन माता को आसानी रहती है इसलिए वे सुबह–सुबह स्वयं चने गर्म पानी में भिगो कर रख देते हैं। इसके बाद उन्होंने अपना ऑफिस और स्कूल दिखाया। उन्होंने बहुत ही अच्छा ऑफिस बना रखा है। और सभी रिकॉर्ड भी व्यवस्थित रहते है। कक्षाओं में भी सभी व्यवस्था अच्छी रहती है। उन्होंने कहा कि स्कूल में किसी के आने या न जाने से (विभाग से या संस्था से) कोई प्रभाव नही बल्कि वे अपनी संतुष्टि एवं कर्तव्य पालन को अधिक महत्व को समझते हुए स्वप्रेरणा से ही करते हैं।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय गढ़वालगाड में और भी अनेक घटनाएं देखने को मिलीं। इसमें अध्यापक द्वारा बच्चे की टूटी हुई चप्पल सिलना, मैदान के कंकड़ साफ करना ताकि बच्चों को खेलते समय न लगे और समुदाय का शिक्षक के प्रति सम्मान एवं सेवाभाव देखकर लगा कि कुछ अध्यापकों में जो संवेदनशीलता और अध्यापन वृत्ति के प्रति ईमानदारी हम महसूस कर रहे हैं उनमें कहीं न कहीं शिक्षा का चमकदार भविष्य दिखाई देता है।

# शिक्षण में घुलते लोकरंग

## राजकीय प्राथमिक विद्यालय मंजियाली, नौगांव

– संजीव बिजल्वाण

**मंजियाली** गांव यमुना नदी के उत्तरी ढाल पर बसा है जो विकासखण्ड मुख्यालय नौगांव से लगभग 10 किमी की दूरी पर है। गांव में 127 परिवार रहते हैं। इनकी आजीविका का मुख्य आधार है खेती–किसानी व पशुपालन। यह गांव भले ही रवांई घाटी का हिस्सा है लेकिन सांस्कृतिक रूप से यहां का जन–जीवन जौनसार से बहुत मेल खाता है। तीज–त्योहारों व शादी–ब्याह जैसे उत्सवों को मनाने व नाचने–गाने का इस गांव का अपना ही अंदाज है।

गांव के पूर्वी छोर पर स्थित है यहां का प्राथमिक विद्यालय। मंजियाली गांव का यह प्राथमिक विद्यालय 1978 में खुला था। 36 वर्षों की यात्रा में इस विद्यालय ने अपनी एक खास पहचान बनायी है। चाहे वह शैक्षणिक गतिविधियों में हो या फिर खेलकूद व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में, सभी में अग्रणी रहने की अपनी साख को यह विद्यालय आज भी बनाए हुए है। नौगांव संकुल के अंतर्गत बालिकाओं के कौशल विकास हेतु संचालित एनपीईजीएल कार्यक्रम का केन्द्र बनने का सौभाग्य इस विद्यालय को मिला। इसके माध्यम से 90 बालिकाओं को लाभान्वित होने का अवसर मिला।

विद्यालय का अपना पक्का भवन है यद्यपि आपदा से इसकी छत और साज–सज्जा पर प्रभाव पड़ा है। एक कम्प्यूटर कक्ष, एक एनपीईजीएल कक्ष तथा एक अतिरिक्त कक्ष भी है जिनमें कक्षाएं संचालित की जाती हैं। एक किचन कम स्टोर तथा रसोई है। दो शौचालय हैं। एक प्रांगण है जिसकी आधी सीमा पर चार दीवारी है जो क्षतिग्रस्त हो चुकी है। विद्यालय में पानी, बिजली जैसी सुविधाएं यहां मौजूद हैं। बच्चों को बैठने के लिए दरियां हैं। 2 सेट कम्प्यूटर भी है। दीवारों पर विभिन्न प्रकार के चित्र बने हैं जो विद्यालय में शिक्षण के लिए उचित वातावरण बनाने हेतु आवश्यक होते हैं। राज्य व राष्ट्रीय चिह्नों के साथ–साथ वर्णमालाओं, संख्याओं, आकृतियां को विभिन्न रंगों में दर्शाया गया है। बच्चों द्वारा चार्ट तथा कपड़े पर बनाए गए

विभिन्न प्रकार के चित्र दिखाते हैं कि बच्चे चित्रकारी के भी उस्ताद हैं। प्रांगण में मोर पंख तथा मौसमी फूल विद्यालय परिसर की सुन्दरता को दिखाते हैं।

वर्तमान में यहां 61 बच्चे पढ़ते हैं। सभी मंजियाली गांव से आते हैं। इनके शिक्षण के लिए 3 शिक्षिकाएं नियुक्त हैं। दो भोजन माताएं हैं। जरूरत पड़ने पर प्रेरक भी मदद करते हैं। यहां के अभिभावकों का शिक्षिकाओं पर भरोसा करना, कुछ बच्चों का प्रवेश जवाहर नवोदय विद्यालय व महाराणा स्पोर्ट्स कॉलेज में होना तथा बाल शोध मेलों, खेलकूद रैलियों, विभिन्न समारोहों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि में यह स्कूल हमेशा अव्वल रहता आया है। स्थानीय गीत–संगीत व नृत्य में तो इस विद्यालय का जवाब नहीं है। संकुल से लेकर जिला स्तर तक यहां के बच्चों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करके सभी को थिरकने के लिए प्रेरित किया है। स्थानीय गीत–संगीत व नृत्य को या स्कूल में बच्चों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने का सफल प्रयास यहां शिक्षिकाओं ने बखूबी किया है। बच्चों के लिए कक्षाएं बोझिल नहीं बल्कि रोचक व मजेदार होती हैं। हिन्दी कविता, अंग्रेजी की कविता के साथ–साथ स्थानीय गीतों को शिक्षण का माध्यम क्यों नहीं बनाया जा सकता है। ऐसा प्रयास बच्चों में न केवल भाषागत दक्षताओं का विकास करता है अपितु स्कूल की

औपचारिक शिक्षा और बच्चे के घर–समाज के जीवन के बीच एक पुल का काम भी करता है। जाहिर सी बात है यह सब तभी संभव है जब यहां की शिक्षिकाएं इसके महत्व को समझती हैं।

बच्चों का विद्यालय के प्रति लगाव बनाए रखने के लिए जरूरी है विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में बच्चों की अधिक से अधिक भागीदारी हो। इसके लिए इस विद्यालय में बच्चों के सदन बनाए गए हैं, जिनको महापुरूषों के नामों से जाना जाता है। जैसे– गांधी, सुभाष, श्रीदेव सुमन आदि। यह सदन शिक्षण, प्रार्थना सभा, खेल, सांस्कृतिक आदि पक्षों में मदद करते हैं। प्रत्येक सदन में एक–एक शिक्षिका को भी नियुक्त किया गया है जो बच्चों को दिशा निर्देश देने का काम करती हैं।

विद्यालय के बेहतर होने के लिए जरूरी है कि हर स्तर से जरूरी सहयोग निरन्तर मिलता रहे। यहां की शिक्षिकाएं भी मानती हैं कि सहयोग तो मिलता है लेकिन और सहयोग की जरूरत होती है, जब हमसे अपेक्षाएं बड़ी होती हैं। हमारे अधिकारी व सीआरसी, बीआरसी समन्वयक तो सहयोग देते रहते हैं, अभिभावक अभी भी उतना सहयोग नहीं कर पाते हैं। हमें बार–बार उनको कहना पड़ता है।

विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती मीना असवाल के शब्दों में, ''हमारी कोशिश रहती है कि सभी बच्चों को समकक्ष लाया जाए, विशेषकर लड़कियों को लड़कों के समान महत्व दिया जाने लगे। आज बच्चों और शिक्षकों के बीच का रिश्ता कमजोर हो गया है यद्यपि आज के बच्चे अधिक मुखर व स्वतंत्र हैं। सबसे महत्वपूर्ण चीज है मैत्रीपूर्ण व्यवहार, इससे बच्चे अच्छी तरह से सीखते हैं। शिक्षा के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ी है, सुविधाएं भी बढ़ी हैं लेकिन अभिभावक अभी भी अपेक्षित सहयोग नहीं करते हैं।''

इस विद्यालय की दूसरी शिक्षिका रक्षा चौहान के अनुसार, '' हम प्रार्थना सभा का उपयोग अन्य गतिविधियों के लिए अधिक करते हैं। इसमें सामान्य ज्ञान, कहानियां, समाचार आदि करवाते हैं। यह भी सीखने के लिए ही तो होती हैं। बच्चे आपस में सीखते हैं। हम सीखने में पिछड़ रहे बच्चों को देखते हैं कि कौन कहां अटक रहा है। स्टाफ का आपसी तालमेल होना बहुत जरूरी है। हम आपस में एक–दूसरे से पूछते हैं, मदद लेते हैं।''

तीसरी शिक्षिका सरिता रावत का कहना है, ''शिक्षा में कुछ समय से कई तरह के सकारात्मक बदलाव आए हैं। प्रार्थना सभा हो चाहे बच्चों की उपस्थिति, हमारा रोल तो हमेशा ही मोटिवेशन का रहा है। हर गतिविधि में बच्चा कुछ न कुछ तो सीखता ही है। खेल–खेल में बहुत कुछ सीखते हैं। हमारे बच्चे प्रतियोगिताओं में हमेशा आगे रहते हैं। विषय के अनुसार शिक्षकों की नियुक्ति हो तो स्कूल और बेहतर प्रदर्शन कर सकता है।'' एसएमसी की सदस्य रीना, अम्बाला ललिता जी कहती हैं कि इस स्कूल में अच्छी पढ़ाई होती है। प्राइवेट स्कूलों में जरूरी नहीं है कि अच्छी पढ़ाई होती है। यहां के बच्चों का अनुशासन बहुत अच्छा है। हम अन्य लोगों को बोलते हैं कि अपने बच्चों को यहां भेजो। सरकार इतनी सुविधाएं दे रही है। यहां की मैडम लोग समय से आती स्कूल आती हैं। जब मैडम अच्छी होंगी तो बच्चे तो अच्छे होंगे ही। हमको भी तो अपने बच्चों के लिए कुछ करना चाहिए। समिति की बैठकों में खूब बात होती है। हमें भी जानना चाहिए कि बच्चे क्या, कैसे सीख रहे हैं।

**हमारी कोशिश रहती है कि सभी बच्चों को समकक्ष लाया जाए, विशेषकर लड़कियों को लड़कों के समान महत्व दिया जाने लगे। आज बच्चों और शिक्षकों के बीच का रिश्ता कमजोर हो गया है यद्यपि आज के बच्चे अधिक मुखर व स्वतंत्र हैं। सबसे महत्वपूर्ण चीज है मैत्रीपूर्ण व्यवहार, इससे बच्चे अच्छी तरह से सीखते हैं। शिक्षा के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ी है, सुविधाएं भी बढ़ी हैं।**

पिछले दो वर्षों में निजी विद्यालयों से भी 5 से 6 बच्चे इस विद्यालय में पढ़ने आए हैं। लोगों का भरोसा हमारे विद्यालय की तरफ बढ़ने लगा है। यह एक चुनौती भी है कि कैसे उनके भरोसे पर खरे उतरें और लगातार बेहतर करते रहें।

*(साथ में प्रकाश, प्रमोद पैन्यूली, परमोद बख्शी)*

# अच्छी-अच्छी बातें सुन

-गिरीश पंकज

टिक, टिक, टिक, टिक
टुन, टुन, टुन ।
अच्छी-अच्छी बातें सुन।

जो बच्चे पढ़ते हैं भैया,
आगे ही बढ़ते हैं भैया।
वही सदा रहते हैं पीछे,,
जो सबसे लड़ते हैं भैया।
बात है सच्ची, इसको गुन।

टिक, टिक, टिक, टिक
टुन, टुन, टुन।
अच्छी-अच्छी बातें सुन।

क, ख, ग, घ बोलो जी,
खेलो-कूदो-डोलो जी।
रोज सुबह जल्दी उठ जाओ,
रात को जल्दी सो लो जी।
देखो कहता है चुन-मुन।

टिक, टिक, टिक, टिक
टुन, टुन, टुन।
अच्छी-अच्छी बातें सुन।

साभार : कविताकोश

# सीखने के लिए परिस्थितियां...

पाठ्य पुस्तकें स्वतः ज्ञान व समझ विकसित कर पाने में समर्थ नहीं होतीं। सीखना कक्षा कक्ष की चारदीवारों के भीतर ही नहीं होता। इसके लिए ज्ञान का स्कूल के बाहर की जिंदगी से जुड़ना और पाठ्य पुस्तक पर कम से कम केन्द्रित होकर पाठ्यचर्या को समृद्ध करने वाला होना जरूरी है।

स्रोत : शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित
उत्तराखण्ड स्टेट इंस्टीट्यूट, 53 ई.सी. रोड, देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड) फोन/फैक्स : 0135-2659864